अबोला स्पंदन

ज़िंदगी से संवाद करती कविताएँ

डॉ अखिलेश प्रताप सिंह तोमर

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Dr. Akhilesh Pratap Singh Tomar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.
BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69956-51-2

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: August 2026

मम्मी-पापा जी
आपके लिए

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

॥ शब्द पुष्प ॥

मनुष्य की संवेदनाओं का सबसे प्रामाणिक दस्तावेज़ कविता होती है। जब कोई कवि विंध्याचल की दृढ़ता, चंबल की सादगी और मालवा की आत्मीयता को अपने अंतर्मन के भावों से जोड़ता है, तब वे भाव सूक्ष्म जीव-विज्ञान की संवेदनशील दृष्टि के साथ कागज़ पर साकार हो उठते हैं। विज्ञान, चिकित्सा और साहित्य के इस अद्भुत संगम से उपजी संवेदनाओं को शब्द देने का सार्थक कार्य किया है डॉ. अखिलेश प्रताप सिंह तोमर ने।

इस काव्य-संग्रह में कवि ने अपने भावों, संवेदनाओं और जीवनानुभवों को बिना किसी कृत्रिमता के शब्द दिए हैं। सहज, सरल और आत्मीय अभिव्यक्ति इस संग्रह की सबसे बड़ी रचनात्मक उपलब्धि है। इसमें जीवन के विविध पक्ष:- प्रेम, स्मृति, अकेलापन, मृत्यु, माँ, बचपन, गाँव, सामाजिक विसंगतियाँ तथा आत्मसंघर्ष को अत्यंत सहज, किंतु प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्त किया गया है।इस संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसकी ईमानदारी है। कवि पाठक को चमत्कृत करने का प्रयास नहीं करता। वह न तो शाब्दिक आडंबर रचता है और न ही भारी-भरकम शब्दावली के माध्यम से स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करता है। वह अपने अनुभवों को उनकी स्वाभाविकता, सहजता और सरलता के साथ प्रस्तुत करता है। यही कारण है कि संग्रह की अनेक कविताएँ पढ़ते हुए प्रतीत होता है मानो कवि नहीं, स्वयं पाठक का अंतर्मन बोल रहा हो।

संग्रह की कविता "अच्छा लगता है" कवि के जीवन-दर्शन की उद्घोषणा करती है। "हमको तो बस दिल लगाना अच्छा लगता है" तथा "हमको तो घर-घर जाकर दिया जलाना अच्छा लगता है" जैसी पंक्तियाँ आज के विभाजित और प्रतिस्पर्धी समाज में प्रेम, सद्भाव और मानवीय मूल्यों की स्थापना का संदेश देती हैं। कविता का कथ्य सरल है, किंतु उसका संदेश अत्यंत व्यापक है। यही सरलता उसकी सबसे बड़ी शक्ति है।"कल मौत मेरी हो जाए तो" संग्रह की उल्लेखनीय दार्शनिक उपलब्धि है। मृत्यु जैसे गंभीर विषय को कवि निराशा का नहीं, बल्कि जीवन-उत्सव का माध्यम बनाता है। "जियो, जियो और खूब जियो" का संदेश जीवन की क्षणभंगुरता का बोध कराते हुए वर्तमान को सार्थक बनाने की प्रेरणा देता है। यह कविता दर्शन और संवेदना का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती है।

"मैं अकेलापन बोल रहा हूँ" आधुनिक समय की सामाजिक त्रासदी का अत्यंत मार्मिक चित्रण है। वृद्धावस्था, उपेक्षा और स्मृतियों के सहारे जीवन जीते मनुष्य का जो एकाकी संसार कवि ने शब्दों में रचा है, वह किसी भी संवेदनशील पाठक को भीतर तक झकझोर देता है। "अकेलेपन को उद्यान में टहलते हुए" जैसा बिंब लंबे समय तक स्मृति में बना रहता है। निस्संदेह, यह संग्रह की श्रेष्ठ रचनाओं में स्थान पाने योग्य कविता है।

"एक सपनों का गाँव" में कवि भारतीय ग्राम्य-संस्कृति की उस आत्मा को खोजता है, जो आधुनिक जीवन की भागदौड़ में कहीं पीछे छूटती जा रही है। पीपल की छाँव, चूल्हे की रोटी, लोकगीत, तीज-त्योहार और सामूहिक जीवन यहाँ केवल दृश्य नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना के जीवंत प्रतीक बनकर उभरते हैं। यह कविता पाठक को अपनी जड़ों की ओर लौटने का आत्मीय निमंत्रण देती है। इन शब्द-पगडंडियों पर चलते हुए पाठक के अंतर्मन में अपना गाँव सजीव हो उठता है।प्रेम-विषयक कविताओं में कवि का दृष्टिकोण परिपक्वता के धरातल को स्पर्श करता है। "चले आना", "दौर-ए-उम्र" और "बात अच्छी नहीं लगती" में प्रेम केवल आकर्षण नहीं, बल्कि जीवन के उत्तरार्ध तक साथ निभाने वाली आत्मीय अनुभूति के रूप में सामने आता है। विशेषतः "दौर-ए-उम्र" यह स्थापित करती है कि उम्र शरीर की होती है, प्रेम की नहीं।सामाजिक सरोकारों की दृष्टि से "बेटी तुम बेटा ना होना" उल्लेखनीय कविता है। यह स्त्री की गरिमा को प्रतिष्ठित करते हुए समाज की विकृत मानसिकता पर तीखा प्रहार करती है। वहीं "मन के जाले" आत्ममंथन की ऐसी कविता है, जो मनुष्य को स्वयं से संवाद करने के लिए प्रेरित करती है।

"बचपन" और "प्रेम है माँ" जैसी रचनाएँ संग्रह को भावनात्मक ऊँचाई प्रदान करती हैं। बचपन की स्मृतियों का सजीव चित्रण हो अथवा माँ के बहुआयामी व्यक्तित्व का भावपूर्ण अंकन दोनों ही कविताएँ पाठक के निजी अनुभवों से सहज तादात्म्य स्थापित कर लेती हैं।शिल्प की दृष्टि से कवि ने सरल, प्रवाहमयी और संप्रेषणीय भाषा का प्रयोग किया है। हिंदी के साथ उर्दू शब्दावली का स्वाभाविक समावेश कविताओं में मधुरता और लय उत्पन्न करता है। बिंबों और प्रतीकों का प्रयोग सहज एवं प्रभावी है। मुक्तछंद और गीतात्मक शैली का संतुलित प्रयोग इस संग्रह को विविधता प्रदान करता है।

एक आलोचक के रूप में यह कहना भी उचित होगा कि कुछ कविताओं में भावों की पुनरावृत्ति तथा विस्तार अपेक्षाकृत अधिक प्रतीत होता है। यदि कवि भविष्य में शब्द-

संयम और संपादन में कसावट करे तो उनकी अभिव्यक्ति और अधिक तीक्ष्ण तथा प्रभावशाली बन सकती है। किंतु यह छोटी-सी सीमा उनकी रचनात्मक ऊर्जा और संवेदनात्मक सामर्थ्य को तनिक भी कम नहीं करती।

समग्रतः यह काव्य-संग्रह संवेदना, अनुभव और मानवीय मूल्यों का एक विश्वसनीय दस्तावेज़ है। इसकी कविताएँ पाठक को केवल रसास्वादन ही नहीं करातीं, बल्कि उसे अपने भीतर झाँकने, संबंधों को नए अर्थों में समझने और जीवन को अधिक संवेदनशील दृष्टि से देखने के लिए प्रेरित करती हैं। यही किसी भी सार्थक कविता की सबसे बड़ी सफलता है।मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह काव्य-कृति साहित्य-जगत में अपना सम्मानजनक स्थान बनाएगी तथा पाठकों के हृदय में लंबे समय तक अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराएगी।

डॉ. अखिलेश प्रताप सिंह तोमर के साहित्यिक अवदान और उनके उज्ज्वल भावी सृजन-पथ के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

विजय सिंह चौहान

(अधिवक्ता, पत्रकार एवं लेखक)

99 एडवोकेट चैंबर,

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय परिसर, इंदौर

आभार

यह मेराद्वितीय काव्य-संग्रह है। इस संग्रह की प्रत्येक कविता मेरे अंतर्मन की अनुभूतियों, संवेदनाओं और जीवन के विविध आयामों की सजीव अभिव्यक्ति है। इन शब्दों को स्वर देने की इस सृजन-यात्रा में अनेक आत्मीय जनों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग, स्नेह, प्रेरणा और मार्गदर्शन मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा। उन सभी के प्रति मैं हृदय की गहराइयों से कृतज्ञ हूँ। यद्यपि प्रत्येक सहयोगी का नाम लेना संभव नहीं, तथापि कुछ ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनका स्मरण किए बिना यह पुस्तक पूर्ण नहीं हो सकती।

पूजनीय दादाजी एवं दादीजी: जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में आपने जो संस्कार, जीवन-मूल्य और स्नेह मुझे प्रदान किया, वही आज मेरे व्यक्तित्व और लेखन की आधारशिला हैं। शब्दों में यदि कहीं संवेदना दिखाई देती है, विचारों में यदि कहीं विनम्रता झलकती है और भावों में यदि कहीं आत्मीयता का स्पर्श मिलता है, तो वह आपके ही संस्कारों का प्रतिफल है।आज आप दोनों इस लोक में भले ही सशरीर उपस्थित नहीं हैं, किन्तु आपकी स्मृतियाँ मेरे जीवन की सबसे अमूल्य निधि हैं। जीवन के प्रत्येक सुख-दुःख में आपकी सीख और आपका स्नेह आज भी मेरा पथ आलोकित करते हैं। सजल नेत्रों से आपको स्मरण करते हुए, मैं सदैव आपके आशीर्वाद की अभिलाषा करता हूँ। सजल नयनों से आपका स्मरण करते हुए, मैं जीवनपर्यन्त आपके आशीर्वाद का आकांक्षी रहूँगा।आपके आशीर्वाद का सदा आकांक्षी आपका लाडला पोता 'चिंटू'

परम पूजनीय माँ एवं पिताजी: कहा जाता है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है, किन्तु मैं मानता हूँ कि उसका भाग्य सबसे पहले उसके माता-पिता के त्याग, तपस्या और संस्कारों से निर्मित होता है। मेरे जीवन में जो भी उपलब्धियाँ हैं, वे आपके निःस्वार्थ प्रेम, अथक परिश्रम, अनगिनत

त्यागों और अटूट विश्वास का परिणाम हैं। यह पुस्तक केवल मेरे शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि आपकी तपस्या का साकार रूप है। इसका प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक भाव और प्रत्येक अक्षर आपको समर्पित है। आपने मुझे केवल जीवन ही नहीं दिया, बल्कि जीवन को सार्थक ढंग से जीने की दृष्टि भी दी। जब-जब मैं स्वयं को कमज़ोर पाता हूँ, तब-तब आपका विश्वास मेरी सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है। आप दोनों के चरणों में मेरा शत-शत प्रणाम और जीवनपर्यंत कृतज्ञता।

मेरी जीवनसंगिनी, डॉ. अंजली तोमर: जीवन की इस अनवरत यात्रा में यदि किसी ने मेरे मौन को शब्द दिए, मेरी व्यस्तताओं को धैर्य दिया और मेरे स्वप्नों को अपना विश्वास दिया, तो वह आप हैं। हर कठिन क्षण में आपका अटूट साथ, आपका धैर्य और आपका विश्वास मेरे लिए सबसे बड़ी शक्ति रहा है।मेरे लेखन के पीछे जितनी मेरी अनुभूतियाँ हैं, उतना ही आपका मौन सहयोग भी है। इस संग्रह की सफलता में आपका योगदान उन शब्दों की भाँति है, जो दिखाई भले न दें, पर सम्पूर्ण कविता को अर्थ प्रदान करते हैं।आपके प्रति अपने मन की भावनाएँ इन पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करना चाहूँगा—

आरोह, अवरोह, अंदाज़, अदा, अदायगी क्या-क्या नहीं हो
सरस, सलिल, सरल, सुलभ, संजीदगी क्या-क्या नहीं हो।

मेरी प्यारी बिटिया, भूमि: तुम केवल मेरी बेटी नहीं, बल्कि मेरी सबसे निष्पक्ष पाठिका, सबसे सच्ची समीक्षक और मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा हो।इस काव्य-संग्रह में**"प्रेम ही माँ"**शीर्षक कविता तुम्हारी सबसे प्रिय रचना है। तुम्हारे द्वारा उस कविता को बार-बार पढ़ना, उसके भावों को आत्मसात करना और उस पर अपनी सहज प्रतिक्रियाएँ देना मेरे लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं रहा। तुम्हारी मासूम दृष्टि ने मुझे यह सिखाया कि कविता की सबसे बड़ी शक्ति उसकी सरलता और उसकी संवेदना होती है।तुम्हारी मुस्कान,

तुम्हारा निष्कपट स्नेह और तुम्हारा विश्वास ही मेरी लेखनी की सबसे बड़ी प्रेरणा है। ईश्वर करे तुम्हारे जीवन में प्रेम, संवेदना और उजास सदैव बना रहे।मेरी सबसे प्यारी बेटी, मेरी सबसे प्रिय मित्र और मेरी प्रेरणा बनने के लिए तुम्हें अनंत स्नेह और आशीष।

मेरी बहनें—ममता सिंह, प्रियंका सिंह एवं दीप्ति सिंह तथा बहनोई—राजेश सिंह, नबील सिंह एवं अवनीश सिंह: आप सभी का स्नेह, आत्मीयता, विश्वास और समय-समय पर प्राप्त सहयोग मेरे जीवन की अमूल्य पूँजी है। जीवन के हर पड़ाव पर आपका साथ मुझे यह विश्वास दिलाता रहा कि परिवार केवल रक्त का संबंध नहीं, बल्कि हर परिस्थिति में एक-दूसरे का संबल बनने का नाम है।आप सभी के प्रति मेरा हृदय सदैव कृतज्ञ रहेगा।

अंत में, मेरे आदरणीय पाठकों, प्रिय मित्रों एवं मेरे प्रिय विद्यार्थियों के नाम: एक लेखक के लिए उसकी रचना तब पूर्ण होती है, जब उसे पढ़ने वाले संवेदनशील पाठक मिलते हैं। मेरी कविताएँ यदि आपके मन के किसी कोने को स्पर्श कर सकें, किसी स्मृति को जगा सकें या किसी भाव को शब्द दे सकें, तो मैं अपने इस प्रयास को सफल मानूँगा।

मेरे मित्रों ने समय-समय पर अपनी निष्पक्ष आलोचनाओं, सार्थक सुझावों और उत्साहवर्धन से मेरे लेखन को नई दिशा दी। वहीं मेरे विद्यार्थियों ने अपने प्रश्नों, जिज्ञासाओं और सहज प्रतिक्रियाओं से मुझे निरंतर सीखने, सोचने और स्वयं को बेहतर बनाने की प्रेरणा दी। वस्तुतः मैं जितना उन्हें पढ़ाता हूँ, उससे कहीं अधिक उनसे सीखता हूँ।

मेरे समस्त पाठकों के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ, क्योंकि किसी लेखक के लिए सबसे बड़ा सम्मान उसके पाठकों का स्नेह और विश्वास होता है।

मैं हृदय से कामना करता हूँ कि आपका स्नेह, आपका मार्गदर्शन और आपका विश्वास भविष्य में भी मेरी लेखनी को इसी प्रकार ऊर्जा प्रदान करता

रहेगा। आप सभी के प्रति सादर प्रणाम एवं हृदय की अनंत गहराइयों से हार्दिक आभार।

"शब्द मेरे हो सकते हैं, पर उनकी आत्मा उन सभी आत्मीय जनों के स्नेह से निर्मित हुई है, जिन्होंने मुझे संवेदना का अर्थ समझाया। यदि इन कविताओं में कहीं जीवन धड़कता हुआ महसूस हो, तो उसका श्रेय मेरे परिवार, मित्रों, विद्यार्थियों और मेरे प्रिय पाठकों को है; मैं तो केवल उन भावों का एक विनम्र माध्यम भर हूँ।"

मेरी बात

"लिखना किसको आता है, बस कलम घसीटी जाती है,
कुछ शब्द पिरोये जाते हैं, एक लकीर उकेरी जाती है।
गीतों, छंदों और ग़ज़लों से हमको क्या लेना-देना है,
कुछ बात उछाली जाती है, न जाने क्या बन जाती है।"

मैंने कभी कविता लिखने का दावा नहीं किया। जब भी मन ने कुछ गहराई से महसूस किया, वही भाव सहज रूप से शब्द बन गए। यही अनकही अनुभूतियाँ**"अबोला स्पंदन"**का आधार हैं। यह संग्रह किसी एक विषय का नहीं, बल्कि प्रेम, विरह, स्मृतियों, रिश्तों, प्रकृति, आशा, पीड़ा और आत्मसंवाद से गुज़रती जीवन-यात्रा का विनम्र शब्दांकन है। मेरे लिए कविता शब्दों का कौशल नहीं, भावों की ईमानदार अभिव्यक्ति है। यदि इस संग्रह की कोई पंक्ति आपके मन की किसी स्मृति को स्पर्श करे, कोई मौन भाव जगा दे या आपको स्वयं से संवाद का अवसर दे, तो मैं अपने इस विनम्र प्रयास को सार्थक मानूँगा।

स्नेह, विश्वास और विनम्रता सहित

डॉ. अखिलेश प्रताप सिंह तोमर

अनुक्रमणिका

"लोग मिल ही जाते हैं" 1
"भूल गए दोस्त" 2
"ज़रुरी हैं दोस्त" 3
"इश्क़" 4
"जब दोस्त मिल गए" 5
"आँसू बहा लो" 6
"अनुपम साथ" 7
"दोस्तों से कैसे मिलते हैं" 8
"शैतान शख़्स" 9
"कोई मलाल नहीं" 10
"ज़िरह" 11
"चले आना" 12
"जबलपुर" 13
"दो आदेशित करती आँखें" 15
"मैं जानता हूँ" 17
"बात अच्छी नहीं लगती" 18
"खोया इतवार" 19
"बेटी तुम बेटा ना होना" 21
"कौन है दोस्त" 23
"मैं जंगल हूँ" 25
"97 (संतानवे) की यारियाँ" 27
"ख़्वाब" 30

"हे गुरू तुम वंदनीय" 31
"मोहब्बत के गीत" 33
"मन के जाले" 34
"अंजाम" 35
"परेशान दिल" 36
"बुझते दिये" 37
"मुद्दे पे आ" 38
"मैं कौन हूँ" 39
"मत टूट अभी" 40
"हार-जीत" 41
"छल" 42
"जुदाई" 43
"असफल परवाज़" 44
"तुम कौन" 45
"बचपन" 47
"नया चलन" 48
"प्रेम है माँ" 49
"ज़ुल्म-ओ-सितम" 51
"सब जंगल जंगल" 52
"अच्छा वक़्त भी आयेगा" 53
"जीत जाएँगे हम" 54
"दिखावटी लोग" 56
"मैं अकेलापन बोल रहा हूँ" 57
"होली" 59

"कल मौत मेरी हो जाये तो" 60
"वो दोस्त है".. 63
"मैं जिया ही नहीं"... 65
"ख़ुद-कलामी" 69
"मुझे सफ़र करना है" 70
"गुमान मत रख"... 71
"जीवन सफ़र" 72
"संकुचित मन" 73
"सच के काँटे"... 77
"एक सपनों का गाँव" 79
"कैसा है दोस्त"... 81
"उलझन घड़ी के काँटों से"...................................... 82
"दोस्ताना".. 84
"दौर-ए-उम्र" 85
"जीवन झमेला" 86
"पैर रहें ज़मीन पर".. 88
"अशांत मन" 89
"अच्छा लगता है".. 90
"ये नया साल है प्यारे'.. 93
"रह ही गया".. 95
"तो कुछ बात करूँ" 96
"ख़ुद से उलझन"... 97
"स्कूल अभी तो चलना होगा" 98
"मोहब्बत अभी और होगी" 100

“सोचता हूँ एक कहानी लिखूँ मैं” 101
“दोस्त मेरे अब भी हैं” 107
“मेला” 108
“अनमोल अनुभव” 109
“कहता है” 111
“शिकायत क्यूँ तुमसे करूँ” 112
”मजबूत करे मतदान” 113
“होली है” 115
“विद्रोह” 116
“बेलगाम कलम” 118
“अकेलापन” 120
“जीवन के मोड़” 123
“अनपढ़” 126
“निकम्मा माज़ी” 130
“मिलने की आशा” 132
“यूँ भी हो लिये” 134
“रूह ज़िंदा है” 136
“मन को /(से) आजादी” 138
“आत्मविश्वास” 140
“याद नहीं आती” 141
“गुमान रखिये औक़ात भर” 142
“साथ गर तेरा हो” 143
“बरसात के बहाने” 144
“मैं लौट आया हूँ” 146

"अपने-पराये".. 147
"बाकी है" 149
"क्यूँ नहीं है" 151
"मेरे अंधेरे"... 152
"तू हासिल मुझे" 153
"बैठा है"... 154
"क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा".. 155

"लोग मिल ही जाते हैं"

ठहरता कौन है किसी के लिए लोग आगे बढ़ ही जाते हैं
ज़माने का दस्तूर है कि लोगों को लोग मिल ही जाते हैं।
तुम ख़ुद को कितना भी जरूरी समझो क्या फ़र्क़ पड़ता है
ज़रूरत निकलने पर यहाँ अक्सर लोग बदल ही जाते हैं।
पुराने ज़ख़्मों को कितना भी कुरेदिए ताज़ा रखने के लिए
वक्त के मरहम से अक्सर सारे ज़ख्म भर ही जाते हैं।
हुस्न वालों हुस्न और निखारिए और जरा इतराइए भी
मोहब्बत के सफ़र में अक्सर इश्क़ मिल ही जाते हैं।
खंजरों को और तराशिये शमशीर को जरा धारदार रखिए
यहाँ अपनों में ही कुछ लोग दगाबाज़ मिल ही जाते हैं।
वो जो कहते हैं की तुम अच्छे हो तो दुनिया अच्छी है, झूठे हैं
अच्छों के साथ बुरा करने वाले लोग अक्सर मिल ही जाते हैं
भरोसा कीजिए मगर आँख मूँदकर किसी पर नहीं
भरोसे की क़ातिल लोग अक्सर यहाँ मिल ही जाते हैं।

“भूल गए दोस्त”

भूली बिसरी यादों के सिरे पकड़ायेंगे
रोशनी फैलाने जुगनू उड़ उड़ आयेंगे।
मैं क्या था और मैं क्या बन गया हूँ
मुझसे बेहतर मेरे दोस्त बतलायेंगे।
अबके जो जाएँगे उन्हीं ठिकानों पर
यकीनन उन सबसे मिलकर आयेंगे।

“ज़रूरी हैं दोस्त”

तुम्हे एहसास भी है, क्या हो रहा है, दोस्त
मैं तुम्हें और तुम मुझे खो रहे हैं, दोस्त।
माना कि ना मिलने से दोस्ती कम नहीं होती
मगर ये तरीका जाँचा परखा नहीं है, दोस्त।
रोज़ मुस्कुराने के लिए नए लोग भी ज़रूरी हैं
ठहाकों के लिए मगर वो विकल्प नहीं हैं, दोस्त।
यूँ नहीं है कि दिलों में फ़ासले आ रहे हैं
मगर नज़र में ना आना भी कम नहीं है दोस्त।
गुज़रते वक़्त से लम्हों को चुराना पड़ता है
लम्हे तुम्हारे बिना ख़ास बनते नहीं हैं दोस्त।
वक़्त पलट कर आता नहीं किसी के लिए
वक़्त बहुत तेज़ी से निकल रहा है, दोस्त।
अभी तुम्हें एहसास नहीं तो कोई बात नहीं
कल मगर होगा तब हम रहेंगे नहीं, दोस्त।

"इश्क़"

चाहत-ए-इश्क़, भला किसको ऐसा होता नहीं है
ये अलग बात है की इश्क़ सबसे होता नहीं है।
लाख ग़मों को दबाए बैठे हुए हैं सीने में सब
ये अलग बात है की दिल सरेआम रोता नहीं है।
चाहता कौन नहीं यहाँ की सपने सच हो जाएँ
ये अलग बात है की हर कोई नींदें खोता नहीं है।

"जब दोस्त मिल गए"

उम्र बड़ी कर गए जब दोस्त मिल गए
दिल जवां कर गए जब दोस्त मिल गए।
कदम थिरक गए जब दोस्त मिल गए
दिल धड़क गए जब दोस्त मिल गए।
नज़र मिली बर्फ़ घुली और हिल मिल गए
शब-ओ-सहर किधर गए जब दोस्त मिल गए।
मन के पेंच-ओ-ख़म खोलकर सारे निखर गए
ज़ेहन-ओ-दिल खुल गए जब दोस्त मिल गए।
धींगा मस्ती, गप्पबाज़ी के दौर चल गए
सबके पोल खुल गए जब दोस्त मिल गए।
रात चढ़ी जाम चले ढोल नगाड़े बज गए
सबके डांस निकल गए जब दोस्त मिल गए।
छायाचित्रों की भरमार हुई सब सँवर सँवर गए
लम्हे क़ैद हुए तस्वीरों में जब दोस्त मिल गए।
चलते चलते फिर मिलने के वादे कर गए
चेहरे सबके उतर गए जब दोस्त घर गए।
आँखें नम कर गए जब दोस्त घर गए
उम्र बड़ी कर गए जब दोस्त मिल गए।

“आँसू बहा लो”

चलो तुम वो आख़िरी दाँव भी आज़मा लो
तुम आँसू बहा लो।
तुमको है ख़बर यहाँ पर मैं हार जाता हूँ
तुम आँसू बहा लो।
झगड़ा ख़त्म नहीं होता रिश्ता जीत जाता है
अभी के लिए बस तुम सब कुछ भुला लो
तुम आँसू बहा लो।

“अनुपम साथ”

है साथ बहुत ये अनुपम, संग संग जीते जाना
राह चले प्यास लगे तो सरस सलिल बन जाना।
हार मिले जो कहीं अगर तो मीत जीत बन जाना
दर्द कहीं ग़र मिल जाए तो मरहम बनते जाना।
गाँठ कहीं जो पड़ जाए तो सहज सुलझ बन जाना
ग़र जो ठोकर लग जाए तो अमिट सीख बन जाना।
बिखरे मन के मोती हों तो तुम प्रीत हार बन जाना
स्नेह पाश में रहना मिलकर जगत जीत तुम जाना।
एक को जो ताप लगे, तुम शीत अनिल बन जाना
एक तिमिर में भटके जो, तुम प्रखर रश्मि बन जाना।

“दोस्तों से कैसे मिलते हैं”

मुझे नहीं पता दोस्तों से कैसे मिलते हैं!
क्या तुम्हें है पता दोस्तों से कैसे मिलते हैं!
उनसे बेख़बर मिलते हैं
या फिर बा ख़बर मिलते हैं
जज़्ब रहना हैं ख़ुद में
या फिर बेसबर मिलते हैं
उनसे बे असर मिलते हैं
या फिर पुर असर मिलते हैं
उनसे वक़्त बे वक़्त मिलते हैं
या फिर देखकर गजर मिलते हैं
कुछ मिलते हैं मुझ जैसे भी
या फिर निखर निखर मिलते हैं
कुछ रखते हैं ख़बर शब-ओ-सहर मेरी
और कुछ बस एक नज़र मिलते हैं
मैं तलाश में हूँ कुछ अच्छे दोस्तों की
ये बताओ तुम जैसे दोस्त किधर मिलते हैं।

"शैतान शख़्स"

वही शख़्स सताता है वही भूल जाता है
जो दिल से होकर रूह में उतर जाता है।
शिकायत तुमसे ना करूँ तो किससे करूँ
गुस्सा ज़हन में रखना मुझे कहाँ आता है।
ना मिलने की सूरत हो और बात भी ना हो
इस तरह देर तक कोई कहाँ निभाता है।
मुझे तू ठुकरा दे मगर नज़रअंदाज़ ना कर
किसी अपने का ये रवैया कहाँ भाता है।
फिर पुकारो तुम कि उसे लाख आवाज़ दो
जो चला गया वो मुड़कर कहाँ आता है।
हुस्न को मोहब्बत अब भला कौन सिखलाए
इश्क़ उसको बहुत आसान नज़र आता है।
वक़्त की क़ैद है सो ज़िंदगी आसां रखिए
दहर में सदा ठहरने भला कौन आता है।

"कोई मलाल नहीं"

जुनून-ओ-ज़िद में ये आँख लाल थोड़ी है
मैं बस सोया नहीं हूँ कोई मलाल थोड़ी है।
मेरे हर झूट को तू झट से पकड़ लेता है
हाँ ठीक है मगर ये कोई कमाल थोड़ी है।
तुम्हें नाज़ अपने जिस्म की ख़ूबसूरती पर
हाँ ठीक है मगर ये कोई जमाल थोड़ी है।
थकन से चूर है जिस्म मेहनत के बाद
हाँ ठीक है मगर कोई निढाल थोड़ी है।
पूरा ख़र्च हुआ सा है मन मेरा तुझ पर
हाँ ठीक है मगर कोई कंगाल थोड़ी है।
तेरा जलवा-ए-जोश तो देखते बनता है
हाँ ठीक है मगर कोई धमाल थोड़ी है।
चारागर हो सके तो दवा कर मेरे दर्द की
हाँ दर्द है मगर कोई हाल बेहाल थोड़ी है।
मैं लुटा हुआ सा खड़ा हूँ तेरे लूटने के बाद
हाँ ठीक है मगर लुटने से मेरा ये हाल थोड़ी है।
मैंने किसी और की ज़मीन कुछ लिख लिया है
हाँ ठीक है मगर ये हुनर का कमाल थोड़ी है।
घोड़ों की दौड़ में गधे का जीत जाना
हाँ कमाल है मगर कोई बा-कमाल थोड़ी है।

"ज़िरह"

ज़िरह अब कौन करे तुमसे चलो मैं मान लेता हूँ
मोहब्बत में हो तुम मुझसे चलो मैं मान लेता हूँ।
जो तुमको मुझसे अबके है क्या वही इश्क़ होता है
मगर लोग कुछ और कहते हैं चलो मैं मान लेता हूँ।
इज़हार-ए-इश्क़ का शायद यही एक तौर होता होगा
मगर तरीका मैंने और देखा है चलो मैं मान लेता हूँ।
तुम बस मुझ पर ठहरोगी यकीं है क्या ये अब तुमको
मगर बेवफ़ाई का इश्क़ में दौर होता है, चलो मैं मान लेता हूँ।
सफ़र में साथ चलने का, इरादा तुम्हारा साफ़ दिखता है मगर,
सफ़र में छोड़ जाने का भी एक मोड़ होता है, चलो मैं मान लेता हूँ।
इब्तिदा-ए-इश्क़ के वादे क्या तुम निभा लोगी
मगर, वादे भुलाने का इश्क़ में दस्तूर होता है, चलो मैं मान लेता हूँ।

“चले आना”

वही बातें, वही फ़ुर्सत वही प्यार लेकर चले आना
तुम जो आना अबके तो इतवार लेकर चले आना।
वही मोहब्बत, वही इज़हार बाकी है मुझमें अब तलक
तुम जो आना अबके तो इक़रार लेकर चले आना।
वही नखरे, वही नाटक बाकी हैं मुझमें अब तलक
तुम जो आना अबके तो मनुहार लेकर चले आना।
वही कंपन, वही हलचल बाकी है मुझमें अब तलक
तुम जो आना अबके तो क़रार लेकर चले आना।
वही थपकी, वही बोसा बाकी है सब अब तलक
तुम जो आना अबके तो रुख़्सार लेकर चले आना।
वही अपने, वही अपनापन बाकी है सब अब तलक
तुम जो आना अबके तो प्यार लेकर चले आना।
वही मस्ती, वही गपशप बाकी है सब अब तलक
तुम जो आना अबके तो मेरे यार लेकर चले आना।

“जबलपुर”

एक मोहब्बत, एक नज़ाकत
एक नफ़ासत, एक शरारत
एक शिकायत,एक ज़रूरत
एक सजावट, एक कसावट
और हाँ
वो जो होता है ना
धार्मिक सहारा, नदी का किनारा
कल-कल करती धारा
एक जुनून, एक सुकून
एक झुकाव, एक लगाव
और कभी कभी अलगाव
एक अपनाना, एक दोस्ताना
दिलों में मिलना ठिकाना
मन में समा जाना
कहीं गहरा उतर जाना
नज़दीक बुलाना, पास बैठाना
दो से एक हो जाना
हाथ पकड़ना, मोह जगाना
और कहना अब ना जाना
ख़ुशियाँ देना, ग़म ले लेना
दिल में जमते जाना

दोस्त बन जाना, संग मुस्कुराना
और बस गले लग जाना
बस यूँ समझो कि मिल जाना
जैसे एक दबा हुआ ख़ज़ाना

क्या कहता होगा इनको ज़माना
क्या कहते हो इनको तुम, ज़रा बताना
मैं तो कहता हूँ इसको ''सुकून-पुर''
कागज़ों में जिसका नाम है
''जबलपुर'', ''जबलपुर'', ''जबलपुर''

“दो आदेशित करती आँखें”

मुझको मद से हद में लाती दो आदेशित करती आँखें
कान पकड़कर राह दिखाती दो आदेशित करती आँखें।
आमंत्रित करती फिर ठुकराती दो आदेशित करती आँखें
पल पल मुझको राह भुलाती दो आदेशित करती आँखें।
पाठ पढ़ाती सीख सिखाती दो आदेशित करती आँखें
जीवन पथ को सुगम बनाती दो आदेशित करती आँखें।
धर्म बताती कर्म कराती दो आदेशित करती आँखें
मन की उलझन को सुलझाती दो आदेशित करती आँखें।
प्रेम जताती प्रेम जगाती दो आदेशित करती आँखें
प्रेम पथिक को ख़ूब लुभाती दो आदेशित करती आँखें।
सच को सच में अनुमोदित करती दो आदेशित करती आँखें
झूठ की मुझको राह भुलाती दो आदेशित करती आँखें।
क्या देखूँ मैं मुझे बताती दो आदेशित करती आँखें
रात काटकर सुबह दिखाती दो आदेशित करती आँखें।
मिलके मन को ख़ुश कर जाती दो आदेशित करती आँखें
बिछड़ के आँखें नम कर जाती दो आदेशित करती आँखें।
जब तब रूठी रूठी जाती दो आदेशित करती आँखें
मुझे सताकर मन में मुस्काती दो आदेशित करती आँखें।
गिरते मन में जोश जगाती दो आदेशित करती आँखें
कर्तव्य राह पर मुझे बढ़ाती दो आदेशित करती आँखें।
दुःख में सुख की याद दिलाती दो आदेशित करती आँखें

सुख में ये भटकाव भुलाती दो आदेशित करती आँखें।
तट पर थमकर मत पछताओ कहती दो आदेशित करती आँखें
मोती लाने गहरे जाओ कहती दो आदेशित करती आँखें।
प्रेम पाश का आलिंगन देती दो आदेशित करती आँखें
दो से हमको एक बनाती दो आदेशित करती आँखें।
पिता बने तो माँ भी बन जाती दो आदेशित करती आँखें
मेरे सर पर छत बन जाती दो आदेशित करती आँखें।
शजर बड़ी हैं धूप बचाती दो आदेशित करती आँखें
सफ़र कठिन में शीतलता लाती दो आदेशित करती आँखें।
सजग रहूँ मैं मुझे बताती दो आदेशित करती आँखें
पर मुझको बस भरमाती वो दो आदेशित करती आँखें।

“मैं जानता हूँ”

इश्क़ जान ले लेगा इतना तो मैं भी जानता हूँ
मगर मैं परवाना हूँ मरना तो मैं भी जानता हूँ।
एक शख़्स से मोहब्बत में नाकाम हुए तो क्या हुआ
मोहब्बत फिर से हो सकती है इतना तो मैं भी जानता हूँ।
एक नाकाम मोहब्बत पर मैं रुक तो नहीं सकता
सब बिसरा कर आगे बढ़ना तो मैं भी जानता हूँ।
दौर-ए-दिल्लगी मैं आँसुओं का वक़्त भी आता है
तो क्या जी सबसे छुपकर रोना तो मैं भी जानता हूँ।
शख़्स वो खूबसूरत है भरोसे का नहीं लोग कहते हैं
अब सबकी बातों में ना आना तो मैं भी जानता हूँ।
हुस्न पहल नहीं करता सो तुमको ही कहना होगा
पागल समझे हो क्या इतना तो मैं भी जानता हूँ।
मोहब्बत में जिस्म की बंदिशें अक्सर टूट ही जाती हैं
अब मदहोशी में पर्दे का गिरना तो मैं भी जानता हूँ।

“बात अच्छी नहीं लगती”

बस यही एक बात मुझे अच्छी नहीं लगती
मेरी मुझसे मुलाक़ात मुझे अच्छी नहीं लगती।
मैं अक्सर ख़ुद से सच बोल देता हूँ
सच से यही मुलाक़ात मुझे अच्छी नहीं लगती।
अँधेरा उकसाता है मुझे गुनाहों के लिए
रात की बस यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती।
अधूरे ख़्वाब मुझे नींदों से जगा देते हैं
ख़्वाहिशों की यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती।
मैं उससे चाहकर भी आगे नहीं बढ़ पाता
मेरी बस यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती।
मेरे अंदर बिना पूछे कोई शख़्स रहता है
उस शख़्स की यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती।
मेरे ज़हन में ना जाने क्या क्या चलता रहता है
ज़हन की यही ख़ुराफ़ात मुझे अच्छी नहीं लगती।
मुझे मोहब्बत है तुमसे मगर ये कह नहीं सकता
मोहब्बत की यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती।
मैं पीकर भी अक्सर नहीं बहकता हूँ
मयकशी की यही बात मुझे अच्छी नहीं लगती।

"खोया इतवार"

एक वक़्त है कि
इतवार है ख़त्म और दिन ज़्यादा हैं।
एक वक़्त था कि
दिन थे कम और इतवार ज़्यादा थे।
साधन कम थे और साथी ज़्यादा थे
सोचते थे कम और मिलते ज़्यादा थे
इल्म कम था और इरादे ज़्यादा थे
सोच कम थी और सोच से परे ज़्यादा थे
काबू में कम और बेकाबू ज़्यादा थे
जेबों से फ़क़ीर और शहज़ादे ज़्यादा थे
प्यार था कम और प्यारे ज़्यादा थे
नसों में खून था कम और अंगारे ज़्यादा थे
पानी था कम और बहते ज़्यादा थे
मनते थे कम और लड़ते ज़्यादा थे
रोते थे कम और हँसते ज़्यादा थे
मरते थे कम और जीते ज़्यादा थे
धरा पे थे कम और उड़ते ज़्यादा थे
भीरू थे कम और बहादुर ज़्यादा थे
व्यस्त थे कम और वेले ज़्यादा थे
सोचता हूँ ये सब कब पलट गया
जो था ज़्यादा वो कम हो गया

और

जो था कम वो ज़्यादा हो गया

इतवार भी बस अब एक दिन हो गया

ना जाने मेरा इतवार किधर खो गया।

“बेटी तुम बेटा ना होना”

बेटी तुम बेटा ना होना
क्या होता गर बेटा होतीं
झूठ, कपट, कुत्सित मन की
वासना से लिप्त तन की
तुम स्वामिनी होतीं
ये होता गर बेटा होतीं।
ठग से, बल से
या फिर संख्या के बल से
स्त्री देह कोई हर लेतीं
ये होता गर बेटा होतीं।
निर्भया, मलाला जैसी हालत
या फिर कठुआ-कलकत्ता
तुम कर देतीं
ये होता गर बेटा होतीं।
हर अबला-सबला तुमसे डरतीं
झूठ-फ़रेब की बातों से
तुम नार देह डस लेतीं
ये होता गर बेटा होतीं
दिखतीं तुम उजली-सजली
धवल आवरण धर लेतीं
पर मन से तुम मैली होतीं

ये होता गर बेटा होतीं।

सो बेटी तुम बेटा ना होना

हो सके तो तुम रच लेना

एक नई दुनिया

जिसमें बस बेटी होंगी

पढ़ना-लिखना, बढ़ना-चढ़ना

नए विधान रच लेना

पर मेरी बेटी हो सके

तो तुम

कभी बेटा ना होना।

व्यथित, उद्वेलित, आंदोलित, आक्रोशित।

“कौन है दोस्त”

परिवार के बाहर परिवार एक दोस्त है
मैं कर ना पाऊँ वो आभार एक दोस्त है।
मैं हँसूँ तो साथ हँसता एक दोस्त है
मुसीबतों का फ़रिश्ता एक दोस्त है।
उदास आँख का आँसू एक दोस्त है
लफ़ड़े झगड़ों में सबसे धाँसू एक दोस्त है।
हँसते चेहरे पर मुस्कान एक दोस्त है
दिलों के सुकून का सामान एक दोस्त है।
आसमान की उड़ान में परवाज़ एक दोस्त है
अंधकार में राहतों की आवाज़ एक दोस्त है।
बिना सिर पैर की बकवास एक दोस्त है
उलझनों में गंभीरता का आभास एक दोस्त है।
मसख़री में मसख़रा बदमाश एक दोस्त है
कॉलेज के दिनों का पनाश एक दोस्त है।
दूरियों में भी पास पास एक दोस्त है
उम्मीदों के गुलशन का पलाश एक दोस्त है।
बिना फ़िल्टर वाली ज़बान एक दोस्त है
मैं तीर हूँ लक्ष्य का तो कमान एक दोस्त है।
दिन ढले थकान की चाय-शाय एक दोस्त है
मेरी बीमारियों में बाबूमोशाय एक दोस्त है।
मैं जो हूँ रहगुज़र तो रहबर एक दोस्त है

दिल टूटे ग़म नहीं चारागर एक दोस्त है।
मैं कर सकूँ वो हर शिकायत एक दोस्त है
लाख लड़ूँ फिर भी मेरी चाहत एक दोस्त है।
दोस्त है दोस्त है हाँ तू मेरा एक दोस्त है
कैसे कर दूँ तुझको अलग
मेरा तो एक हिस्सा तू दोस्त है।

“मैं जंगल हूँ”

मैं जंगल हूँ……..मैं जंगल हूँ
शांत भी, अशांत भी
विक्रान्त भी, आक्रान्त भी
पार भी, अपार भी
आकार भी, निराकार भी
सौम्य भी, रौद्र भी
पालक भी, संहारक भी
उद्वेलित भी, स्तब्ध भी
थाह भी, अथाह भी
धीर भी, गंभीर भी
सुगम भी, दुर्गम भी
व्यस्त भी, अस्त व्यस्त भी
मधुर भी, कसैला भी
राग भी, बेराग भी
घृणा भी, अनुराग भी
दाग भी, बेदाग़ भी
आरंभ भी, अंत भी
शैतान भी, संत भी
यथार्थ भी, कल्पना भी
रूप भी, कुरूप भी
अचल भी, चंचल भी

राह भी, भटकाव भी
सघन भी, विरल भी
परिपक्व भी, नादान भी
राक्षस भी, इंसान भी
मना भी, अनमना भी
रंग भी, बेरंग भी
कंचन भी, मलीन भी
सफ़र भी, ठहराव भी
तरतीब भी, बेतरतीब भी
दोस्त भी, दुश्मन भी
वन भी, उपवन भी
आग हूँ, मैं शीतल हूँ
मेरा तुम एहतिराम करो
हाँ, हाँ, हाँ…

हाँ जी मैं जंगल हूँ।

“97 (संतानवे) की यारियाँ”

ज़िंदगी उदास हो
कोई ना आस पास हो
तो लेकर के यामाहा RX100 वाली
डालकर के एक जींस डेनिम वाली
और एक टी शर्ट ढीली ढाली
ढूँढने को चैन, सुकून,
चाय सुट्टा और दिल
चल यार जैक पे मिल
जैक पे मिल
चल यार जैक पे मिल।

कब तलक कमाएगा
घंटा लेके आया था
जो घंटा लेके जाएगा
मोहब्बतें तलाश ले
मोहब्बतों के पास ले
मोहब्बतें पुकारतीं
मोहब्बतें तू पाएगा
ढूँढने मोहब्बतें, चाय सुट्टा और दिल
चल यार जैक पे मिल
जैक पे मिल
चल यार जैक पे मिल।

चंदा मामा दूर के
देख ख़्वाब झूर के
वो डाल डाल
तू पात पात
देके देख तू सबको मात
फिर मगर क्या पायेगा
जश्न जो मनायेगा
तो यार किधर से लायेगा
ढूँढने को यार व्यार,
चाय सुट्टा और दिल
चल यार जैक पे मिल
जैक पे मिल
चल यार जैक पे मिल।

ज़िंदगी के खेल में
मौत को तलाशता
सुबह से शाम दौड़ता
धूल ही तो फाँकता
दो गज ज़मीन को
अपने ही कफ़न में तू
जेब को है टाँकता
प्यार पे लुटा ये दिल
प्यार की तलाश में
ढूँढने को फिर वही
अपनी वाली, चाय सुट्टा और दिल
चल यार जैक पे मिल

जैक पे मिल

चल यार जैक पे मिल।

फिर वहीं से वार हो

ज़िंदगी तैयार हो

यारियों से प्यार हो

रविशंकर में शोर हो

SBH में Roar हो

JGH के आगे पीछे

प्यार का इज़हार हो

ग़लतियाँ हज़ार हो

प्यार-ओ-तकरार हो

ढूँढने को फिर वही

यार दोस्त, चाय सुट्टा और दिल

चल यार जैक पे मिल

जैक पे मिल

चल यार जैक पे मिल।

“ख़्वाब”

मेरे ख़्वाब एक चम्मच भर से नहीं थे ज़्यादा
कुछ बचे, कुछ बिखरे,कुछ गिरकर टूट गये।
मेरे रिश्ते एक मुट्ठी भर से नहीं थे ज़्यादा
कुछ सँवरे,कुछ बिखरे,कुछ बिछड़े छूट गये।
मेरे दोस्त एक दोस्त भर से थे कहीं ज़्यादा
कुछ ठहरे, कुछ निकले कुछ मुझसे रूठ गये।

"हे गुरू तुम वंदनीय"

हे गुरू तुम वंदनीय
हे गुरू तुम पूजनीय
मात पिता तुम प्रथम गुरू
आचार्य शाला के द्वितीय
सीख मिलती हमको सभी से
हर चेतन अचेतन ही गुरू
हे गुरू तुम वंदनीय
हे गुरू तुम पूजनीय।

छीलकर के एक शिला को
मूर्त रूप में ढालना हो
या के फिर पाषाण ह्रदय में
भाव मृदुल ही पागना हो
संस्कारों की नींव पर,
व्यक्तित्व विराट उभारते तुम
पल में ही, पलक झपकते
हर असाध्य को साधते तुम
हे गुरू तुम वंदनीय
हे गुरू तुम पूजनीय।

कच्चे घड़े को साधते तुम
मज़बूत करने को सतह पर

थाप भी हो मारते तुम
तीरगी में रोशनी की उजली
किरण बन जाते हो तुम
पथ से हमारी हर शूल शिला को
कर से स्वयं ही छाँटते तुम
हे गुरू तुम वंदनीय
हे गुरू तुम पूजनीय।

है असीमित गान तुम्हारा
लिख सकें जो इस कलम से
इतने नहीं हैं योग्य हम
कर जोड़ हर क्षण
बस यही विचारते हैं हम सभी
धीर तुम, गंभीर तुम
हो प्रथम आराध्य तुम
हर हाल में अभिनंदनीय
हे गुरू तुम वंदनीय
हे गुरू तुम पूजनीय।

“मोहब्बत के गीत”

अब तेरी मोहब्बत के गीत कहाँ तक गाएँ हम
रो तो लिये बहुत अब क्या मर जाएँ हम।
मोहब्बत अभी और हो सकती है ज़माने में
सवाल महज़ ये की अब कहाँ जाएँ हम।
तुम ही फिर से आवाज़ देकर देख लो
क्या पता पलट कर आ जाएँ हम।

“मन के जाले”

साफ कर दिये जो आज वो मन के जाले थे
क्या पता था मुझे मेरे अंदर इतने उजाले थे।
हक़ीक़त में जो कभी मिले ही नहीं
ना जाने एसे कितने डर मैंने पाले थे।
वक़्त के साथ दौड़ का अब मैं नहीं हिस्सा
ना जाने कब से हम भेड़चाल के हवाले थे।
कई उम्मीदें कल झटक दीं अपने काँधों से
बेवजह ही पैरों में मेरे बेड़ियां थीं, ताले थे।
मैं कितने दिनों से ख़ुद की भी नहीं सुनता था
ना जाने कितने शख़्स अपने अंदर मार डाले थे।
मेरी ख़्वाहिशों को अब बचपना मुबारक
बड़े बड़े सपनों ने मेरे पर कतर डाले थे।
कहानी मेरी अब मुकम्मल होती दिखाई देती है
कुछ किरदार ज़िंदा हो उठे हैं, जो मैंने मार डाले थे।

“अंजाम”

बेवफ़ा, बेमुरव्वत कुछ तो नाम दें
चलो अब इस मोहब्बत को अंजाम दें।
संगदिल तुम भी, हूँ संगदिल मैं भी
क्यों पत्थरों पर सर पटक कर जान दें।
लबों पर से अब हटा लो साये लबों के
चलो एक दूजे के हाथों में जाम दें।
तुम अगले मोड़ से अब मुड़ ही जाना
चलो अब इस सफ़र को हम मुक़ाम दें।
गिले शिकवे ना रखना अब कोई भी बाक़ी
फिर मिलें तो कम से कम हम मुस्कान दें।
मोहब्बत फिर से होगी तेरे जाने के आगे भी
दर्द-ए-दिल को दवा का कुछ तो इंतज़ाम दें।

“परेशान दिल”

बस यही सोचकर दिल परेशान सा है
मेरे अंदर भी एक शख़्स अनजान सा है।
हो रहा है शोर, चारों तरफ़ हैं लोग मगर
यहाँ हर दिल में पसरा एक बियाबान सा है।
वक़्त के साथ मुझे बदलता देखकर
है ठिठका हुआ लम्हा, ज़रा हैरान सा है।
मेरे कमरे में कोई रोया है कल रात भर
देखो यहाँ पड़ा एक शख़्स लहूलुहान सा है।
मेरी बज़्म से जाने वाले तेरा ख़ुदा हाफ़िज़
चले जाने में मगर तेरा कुछ नुक़सान सा है।
मेरे बिना भी जो जीने का दम भरता था
सुना है आजकल वो शख़्स परेशान सा है।

“बुझते दिये”

बुझते दिये हैं ज़्यादा फड़फड़ा रहे हैं
ताज़ा दम चरागों पर रौब जमा रहे हैं।
दोपहर की धूप सोखकर बदन जल रहा है
लो हो गई शाम, हम अपने घर जा रहे हैं।
पिघलकर ख़त्म हो जाना है, फिर भी
परवाने शमा से मोहब्बत आज़मा रहे हैं।

"मुद्दे पे आ"

इधर-उधर की बात ना कर,मुद्दे पे आ
क्या क़ीमत रखी है मेरी, मुद्दे पे आ।
इश्क़ अभी है ताज़ा ताज़ा, पर एकतरफ़ा
क्या होगा तू भी इसमें शामिल, मुद्दे पे आ।
जब लोग सुनेंगे क्या बोलेंगे सब बातें हैं
पर क्या तू मन की कर लेगा, मुद्दे पे आ।
मैं ना बोलूँ, चुप ही हो लूँ तो अच्छा है
पर क्या तू सच को सुन लेगा, मुद्दे पे आ।

“मैं कौन हूँ”

मैं इसके, उसके अलावा सब कुछ हूँ
मैं तेरे मन के अलावा सब कुछ हूँ।
है पसंद मुझे अपनी ज़बान से बोलना
मैं तेरी ज़बान के अलावा सब कुछ हूँ।
मेरे अपने रास्ते, मेरी अपनी मंज़िलें
मैं तेरे सफ़र के अलावा सब कुछ हूँ।
है हक़ मुझे अपनी राय क़ायमी का
मैं तेरे मशविरे के अलावा सब कुछ हूँ।

“मत टूट अभी”

मत टूट अभी तू ज़िद तो कर
के हार अभी तो बाकी है।
ना जीत सके तो कोई नहीं
पर एक वार अभी तो बाकी है।
तन ज़िंदा है तू दम तो भर
के साँस अभी तो बाकी है।
रण में रह तू आख़िर तक,
के हाथों में तलवार अभी तो बाकी है।
कट जाए सर तो ग़म ना कर
के जान अभी तो बाकी है।
छिड़क लहू तेज़ाब सरीका
के नसों में तेज़ाब अभी तो बाकी है।
तू जीतेगा संदेह ना कर
विश्वास अभी तो बाकी है।
मेहनतों का अब स्वेद बहे
के तन में हुंकार अभी तो बाकी है।

"हार-जीत"

मुझे हराकर के तुम जीतीं, बहुत अच्छा
तुम्हें लगता है ऐसा तो, ऐसा भी,बहुत अच्छा
तू मेरी ज़िंदगी ना बन, मेरे अल्फ़ाज़ बन जा
मैं आशिक़ हूँ बुरा,मगर सुख़नवर, बहुत अच्छा।
मोहब्बत अब तिजारत है सुना करते हैं लोगों से
अगर है ये तिजारत, तो ये तिजारत भी,बहुत अच्छा।
मेरे रक़ीबों की बस एक ही शिकायत है मुझसे
तू मोहब्बत तो है उनकी,मगर ग़ज़ल मेरी, बहुत अच्छा।

“छल”

कंबल ओढ़कर घी पिया गया उम्र भर
हर संभव गुनाह किया गया, उम्र भर।
रूह काली लिए फ़िरते रहे हम, मगर
तन को कुर्ता कलफ़दार दिया गया, उम्र भर।
कदम चार भी ना चले और थक गए हम
फिर सफ़र का ख़ुमार जिया गया उम्र भर।
पलते रहे सपने इन आँखों में
और फिर ख़ूब सोया गया, उम्र भर।

“जुदाई"

दिल जकड़ लेता है ग़म जाने के दिन
आती है मुश्किल से ख़ुशी आने के दिन।
तुम चली जाओ जो जाना चाहती हो
पर तुम चली आना मेरे जाने के दिन।
दिल कहीं लगता है अब लगने को है
फिर चले आए हैं क्या मैख़ाने के दिन।
नफ़रतें किस काम की पाले हुए जो उम्र भर
सब यहाँ लगते हैं अच्छे यारों बिछड़ जाने के दिन।
है मुझको एतबार उसकी कही हर बात का
मगर मैं जानता हूँ मुकरेगा वो आज़माने के दिन।

"असफल परवाज़"

पंख ज़िंदा थे आसमान कतरा गया
परिंदे का हर अरमान कतरा गया।
ज़िंदा रहने भर की इजाज़त थी उसे
ज़िंदगी का हर सामान कतरा गया।
किरदार मज़बूत था उसका मगर
राह का हर क़द्रदान कतरा गया।
मेहरबानियों की ज़रूरत थी ही कहाँ
फिर मगर हर मेहरबान कतरा गया।

"तुम कौन"

कहानी मेरी, किरदार मेरा
निभाना मुझे.....तुम कौन।
गिरना मेरा, संभलना मुझे
उठना मुझे.......तुम कौन।

सफ़र है मेरा, चलना मुझे
थमना मुझे.......तुम कौन।
फ़लक है मेरा,परवाज़ मेरी
गिरना मुझे........तुम कौन।

नदी सा मैं, रवानी मेरी
बहना मुझे....तुम कौन।
बूँदों सा मैं, बरसना मुझे
बिखरना मुझे.. तुम कौन।

खेल है मेरा, खिलाड़ी हूँ मैं
जीतना मुझे...... तुम कौन।
बाज़ी ये मेरी, चालें हैं मेरी
चलना मुझे........ तुम कौन।

शब है मेरी, अँधेरा मेरा
ढ़लना मुझे....तुम कौन

सहर है मेरी, उजाला मेरा
खिलना मुझे... तुम कौन।

दिल है मेरा, मोहब्बत मेरी
करना मुझे.......तुम कौन।
वफ़ायें मेरी, जफ़ायें मेरी
टूटना मुझे........तुम कौन।

ज़िंदा हूँ मैं, ज़िंदगी मेरी
जीना मुझे.....तुम कौन।
मरकर के, क़ब्र में मेरी
जाना मुझे.....तुम कौन।

मिसरे मेरे, क़ाफ़िया मेरा
लिखना मुझे...तुम कौन।
ग़ज़ल है मेरी, बहर मेरी
मुकम्मल नहीं,पर,...... तुम कौन।

“बचपन”

मुँह पर छींटें कुछ जाने पहचाने से आते हैं
जब सड़कों पर बचपन बारिश का पानी छपकाते हैं
सुनते हैं जब उस बगिया में बच्चे आम चुराने आते हैं
मन ही मन बिन चप्पल के हम बस दौड़े जाते हैं।
जब भी बारिश में बच्चे नाव बनाने कहते हैं
काग़ज़ वाली कश्ती के दिन याद बहुत ही आते हैं।
ख़्वाहिश जब कुछ करके भी पूरी ना हो पाती है
टूटे तारे से फ़रियादों के दिन याद बहुत ही आते हैं।
अब दिल में जब अय्यारी है मक्कारी, दुनियादारी है
बचपन वाली दिलदारी के दिन याद बहुत ही आते हैं
उन रातों का क्या कहना जो आँखों आँखों में कट जाती है
बेफ़िक्र, उनींदे, अल्हड़ से, वो भुनसारे याद बहुत ही आते हैं।

“नया चलन”

जिस्म बेगाना लगता है
नया नशेमन लगता है
दौर-ए-ज़माना क्या हुआ
ये नया ज़माना लगता है।

हम तुम, तुम हम वैसे भी
कितना ही मिल पाते हैं
चलो अभी कारण तो है
हरदम वरना,
नया बताना पड़ता है।

प्रीत नई अपनानी होगी
रीत नई अपनानी होगी
जब तब जीने की ख़ातिर
नया चलन चलाना पड़ता है।

बस फ़िक्र मौत की करते हैं
जीना भूले जाते लोग
क्यों भूले हो इस दुनिया से
सबको जाना पड़ता है।

“प्रेम है माँ”

प्रेम है माँ ,श्रृंगार है माँ
दुलार है माँ, पुचकार है माँ।
फटकार है माँ, मनुहार है माँ
शिक्षा है माँ,शिक्षक है माँ।
सखा है माँ, सखी है माँ
सुरक्षा है माँ, संबल है माँ।
भरोसा है माँ, भागीरथी है माँ
बचाती है माँ, बनाती है माँ।
सुख है माँ, दुख में साथ है माँ
रौनक़ है माँ, उजाला है माँ।
मुस्कान है माँ, मुक़ाम है माँ
उम्मीद है माँ, सब ठीक है माँ।
संस्कार है माँ, दुआ है माँ
फ़िक्र है माँ, इंतज़ार है माँ।
निखार है माँ, निसार है माँ
नम्र है माँ, विनम्र है माँ।
विनोद है माँ, क्रोध है माँ
घर है माँ, छत है माँ।
माहताब है माँ, आफ़ताब है माँ
ख़्वाब है माँ, तामील है माँ।
चाँदना है माँ, सहर है माँ

चाँदनी है माँ, रश्मि है माँ।
छाँव है माँ, ठंडक है माँ
जननी है माँ, पालक है माँ।
अनुपम है माँ, अद्वितीय है माँ
अद्भुत है माँ, अलबेली है माँ।
बस सब कुछ है माँ।

“ज़ुल्म-ओ-सितम”

बहुत हुआ ज़ुल्म-ओ-सितम, क्या अब भी बाक़ी है।
इसी रात का और गहराना, क्या अब भी बाक़ी है।
हुए नतमस्तक बड़े ही शर्मिंदा से हैं लोग
मगर कुदरत का क़हर बरपाना, क्या अब भी बाक़ी है।
दिलों में दूरियाँ तो हम इंसां बड़े जमाने से रखते हैं
शरीरों का भी नहीं मिल पाना, क्या अब भी बाक़ी है।
लुट गया हो जिस तिजोरी का आख़िरी सिक्का भी
उसी तिजोरी को लूटा जाना, क्या अब भी बाक़ी है।
तड़प कर भूख आँतों में ही दम तोड़ देती है
उन्हीं भूखों को और तड़पाना, क्या अब भी बाक़ी है।
मौत पर अब तो मौत भी अट्टहास नहीं करती
ज़िंदगी का यूँ ही मर जाना, क्या अब भी बाक़ी है।

“सब जंगल जंगल”

यहाँ अब सब कुशल मंगल सा लगता है
मेरा शहर आजकल जंगल सा लगता है।
फ़ुरसतें सड़कों पर रहती हैं मेरे शहर में
परिंदों का चहचहाना संबल सा लगता है।
हर हाथ उठ रहा हर हाथ की मदद में
हर शख़्स यहाँ humble सा लगता है।
ख़ामोशी ही ख़ामोशी से बातें करती है
हर आहट का होना हलचल सा लगता है।
जिसकी शक्ति उसका शासन रीत बनी
हर मानव यहाँ अकेला दुर्बल सा लगता है।

"अच्छा वक़्त भी आयेगा"

ख़िज़ाँ है ये माना की कुछ गुलशन उजाड़ जाएगी
मगर उजड़े हुए गुलशन पर बहार फिर से आएगी।
कठिन है बहुत मगर फिर भी ये वक़्त कट ही जाएगा
उदासी चीर कर रुख़ों पर तबस्सुम फिर से आएगी।
है रखना फ़ासला हमको ये वक़्त का तक़ाज़ा है
मगर मिलने मिलाने की बात फिर से आएगी।
कदम थामो ज़रा जी भर के घर पर रह लो तुम
ना जाने वापस ये फ़ुरसत कभी फिर से आएगी।

"जीत जाएँगे हम"

तू रह विशद
ना कर विवाद
तू बात मान कर मेरी
रहे तू घर पर निनाद
ये जीत का है शंखनाद।

बात कर तू दूर से
हाथ धो तू बार बार
तू जीत जाएगा ये जंग
तू ना रख कोई विषाद
ये जीत का है शंखनाद।

ना मिल गले
ना कर मिला
तू हाथ जोड़ लोग से
तो दूर रहेगा रोग से
ले शपथ तू साफ़ सी
जीत का चखेगा स्वाद
ये जीत का है शंखनाद।

भले नहीं उपचार अभी
मिलके लड़ रहे सभी

तू बात मान जो हो सही
अफ़वाह पर ना ध्यान दे
कर सुबह का इंतज़ार
ये जीत का है शंखनाद।

वक़्त बिता तू Home पर
निकल ना यूँ ही Roam पर
Chain को तू तोड़ दे
रोग की गर्दन मरोड़ दे
दिला दे इसको नानी याद
ये जीत का है शंखनाद।

तू श्रेष्ठ है तो सिद्ध कर
मेल मिलाप निषिद्ध कर
कुछ दिनों की है बात
बीत जाएगी ये रात
ये जीत का है शंखनाद।

धीर घर तू धीर धर
खुद को ना अधीर कर
भाव को गंभीर कर
तू दिखा दे जीत कर
उम्मीद को यथार्थ का
अब दिला दे, तू साथ
ये जीत का है शंखनाद।

“दिखावटी लोग”

कुछ इस कदर ज़िंदगी बिताते हैं लोग
जीते हैं कम ज़्यादा दिखाते हैं लोग।
वो जो सबसे पहले छोड़ देते हैं साथ
ख़ुद को सबसे करीब बताते हैं लोग।
यूँ हर किसी को दिल में रखते हो क्यों
कुछ तो बस जाने के लिए आते हैं लोग।
कई परतों के तले रहते हैं चेहरे यहाँ
कहीं असली चेहरा भी दिखाते हैं लोग।

“मैं अकेलापन बोल रहा हूँ”

एक जोड़ी
थके हुए चलते पैर
लिए हुए
वक़्त की ठोकरों के निशान
एक जोड़ी
झूला झूलते निरुत्साहित हाथ
लिए हुए
सब कुछ लूटे जाने के निशान
एक जोड़ी
झुके हुए अनमने से कंधे
जो झटक चुके हैं
ज़िम्मेदारियों की गठरियाँ
जहाँ बाक़ी हैं अब
गठरियों की रगड़ के निशान
एक संगदिल सीना
जिसमें नहीं है हूक का उफ़ान
एक उदर
जिसे नहीं सुहाते अब कोई पकवान
एक मुँह
ना जाने क्या बुदबुदाता हुआ
जिसमें अब दांत भी नहीं पैने
लिए हुए

एक भोथरी सी जीभ बेज़ुबान
एक नाक
जिसे नहीं अब सुगंध का अरमान
एक जोड़ी आँखें
पथरातीं अपनों के इंतज़ार में
ना है जिनमें भविष्य के लिए द्रष्टि
ढोतीं फिरती हैं भूतकाल के निशान
एक अलसाया सा ज़हन
जुदा जुदा सा सभी यादों से
बिना इच्छा-अपेक्षा और बिना अभिमान
एक झुर्रीदार चमड़ी
लिए हुए अनगिनत धोखों के निशान।

देखा है आज मैंने
इस ढाँचे में जीवन को ढलते हुए
हाँ सच में देखा है आज मैंने
अकेलेपन को
उद्यान में टहलते हुए
यादों में विचरते हुए
कोने वाली बैंच ढूँढते हुए
शून्य में ताकते हुए
पथरीले होते हुए
समय से लड़ते हुए
खुद से बातें करते हुए
रह रहकर आँख नम करते हुए।

हाँ मैंने देखा है
अकेलेपन को एकांत से आलिंगन करते हुए।

"होली"

ले गुलाल रंग दियो रे भाल
निकली मस्तों की टोली
वो आए, दौड़े भागे रे डाल डाल
पर पात पात रंगरेज़ों की है टोली
अंग अंग अब रंग रंग रे डाल डाल
हुरियानी देखो मस्तों की टोली
सहमी गोरी, बचती रे बाल बाल
हिलोर मारती हुड़दंगों की टोली
रंग, फाग, रास रंगीले रे गाल गाल
उड़त चलत इधर-उधर ले भांग की गोली
सुध बुध खोती हुरियारों की टोली
गारी देत भौजाई रंग दियो रे गाल
भागी देवरां की टोली
छूटी पिचकारी हुई अँगिया रे लाल
गोरियाँ बेहाल रे आँख लाल
करती कमाल नटखटियों की टोली
चल ले गुलाल कर हाथ लाल
रंग दे सब बाल भाल
रहे ना बाकी कोई मलाल
खेलो खुल के रे होली
निकली मस्तों की टोली।

“कल मौत मेरी हो जाये तो”

पुतली आँखों की फैली हो
पलकें ना मिलना चाहें पलकों से
साँस अगर जो रुक जाये
और दिल की धड़कन थम जाये
तब क्या हो जब ये सच हो जाये
और कल मौत मेरी ही हो जाये।

धरती पर क्या थम जाएगा
अंबर में क्या रुक जाएगा
क्या समय रुकेगा चलने से
क्या पवन खटोला गिर जाएगा।

क्या रात नहीं होगी काली
क्या दिन का उजियारा ढल जाएगा
क्या नदियाँ कल-कल छोड़ेंगी
क्या पंछी कलरव छोड़ेंगे
क्या मीन धरा पर सिर पटकेंगी
क्या धरा चीरकर लावा निकलेगा
क्या सागर दिल ही दिल में सुबकेगा।

कोई यार नहीं होगा काँधों में,
शायद ही आ पाएगा

ख़बर लगी तो ठिठकेगा
अफ़सोस ज़रा सा दिखलाएगा
दस्तूर यही है दुनियादारी का
फिर दुनिया में वो रम जाएगा।

रिश्तेदारों की तो क्या कहिये
ज़िंदा में जो ख़ैर ना लें
वो जब मरने की ख़बर सुनेंगे
तो क्या दौड़े आएँगे
समय निकालेंगे मातमपुरसी का
दिखलावा दिखला जाएँगे।

हाँ मुट्ठी भर आँखों में होंगे आँसू
ज़रा देर को जीवन थम जाएगा
फिर आँखों के आँसू भी सूखेंगे
चेहरा कुछ दिन मुरझाएगा
होंगी मेरी बातें कुछ दिन
फिर अपने भी बिसराएँगे
क्रूर काल की रीत निभाने
फिर ये चेहरे भी खिल जाएँगे
कभी कभी फिर होंगी बातें
दुख भी घटता जाएगा
और एक दिन ऐसा होगा
ये क़िस्सा भी थम जाएगा।

सो, सफ़र भले ही भीड़ भरा हो
मगर रहेगा जीने तक

मरते ही छोड़े जाओगे, राहों में
देह भुरभुरी होने तक।

तो जियो यहाँ हर पल अंतिम सा
जब तक इस दुनिया में हो
चिंता छोड़ो सब लोगों की
क्या पराया क्या अपना हो
ख़ुशियाँ पालो, ख़ुशियाँ बाँटो
ख़ुशियों का व्यवहार करो
शंका छोड़ो, बेड़ी काटो
चिंता का संहार करो
जियो जियो और ख़ूब जियो
एक दिन में सौ बार जियो।

“वो दोस्त है”

साहिल का सुकून है दोस्त
लहरों का आवेग है दोस्त
समंदर सा गहरा है दोस्त
क्षितिज का कोहरा है दोस्त
पत्ती पर ओस सा ठहरा है दोस्त
आफ़ताब सा गर्म है दोस्त
माहताब सा शीतल भी दोस्त
मख़मली तितली है दोस्त
कली पर भँवरा है दोस्त
गुलाबी ठंडक है दोस्त
सहर की धूप है दोस्त
शब की मौज है दोस्त
भरोसा एक रोज़ है दोस्त
यादों का जनक है दोस्त
यादों की महक है दोस्त
कमसिन सा नख़रा है दोस्त
बाज-वक़्त मसख़रा है दोस्त
हिम्मत हर वक़्त है दोस्त
फ़ौलादी जिगर है दोस्त
हाँ ये भी है दोस्त
और वो भी है दोस्त

फिर मगर.......
अब कहाँ है दोस्त
ना गुमटी पर दोस्त
ना नुक्कड़ पर दोस्त
ना अय्यारी में दोस्त
ना दोस्ती यारी में दोस्त
ना धींगा मस्ती में दोस्त
ना लौंडे लपाड़ी में दोस्त
कहाँ मदहोश गश्ती में दोस्त
ना गप सड़के में दोस्त
ना पहले प्यार के तड़के में दोस्त
ना फाका फ़क़ीरी में दोस्त
ना दिल की अमीरी में दोस्त
हाँ मगर अब भी है दोस्त
कभी कभी आते हैं दोस्त
ठंडी हवा के झोंके से दोस्त
महकाते यादों का गलियारा दोस्त
दूर भगाते जीवन का अँधियारा दोस्त
यूँ ही सदा आते रहना दोस्त
दिन महकाते रहना दोस्त।

“मैं जिया ही नहीं”

मैं डरता रहा उम्र भर,
उन डरों से जो थे ही नहीं
यानी की मैं जिया ही नहीं,
लुत्फ़ ज़िंदगी का लिया ही नहीं।
धूप थी ही नहीं, उतनी कभी
जितनी मैं लेकर चलता रहा
सिर पर आग की तरह
पेशानी पर पसीने की तरह
बदन पर चुभन की तरह
और पैरों तले जलन की तरह।
मगर...
छाँव ही छाँव मुसलसल रही
अधिकांशतः ज़िंदगी में
सर की आग बुझाने को
पेशानी का पसीना सुखाने को
बदन की चुभन सहलाने को
पैरों की जलन मिटाने को
मगर मैं धूप निगलता रहा,
मैंने छाँव पी ही नहीं
यानी की मैं जिया ही नहीं,
लुत्फ़ ज़िंदगी का लिया ही नहीं।

राहें दिखीं मुझे हरदम काँटों भरी
उतने चुभे भी नहीं जितने लगते रहे
ज़हन में कील की तरह
आँखों में कंकड़ की तरह
गर्दन में शमशीर की तरह
दिल में नश्तर की तरह
पीठ में धोखे की तरह
उदर में आरी की तरह।
मगर......
रहगुज़र बेशक खूबसूरत ही रहे
हरदम सफ़र में ज़िंदगी के
ज़हन को लुभाने को
आँखों को ठंडाने को
गर्दन को हार पहनाने को
दिल गुलशन बनाने को
पीठ सहलाने को
उदर की आग बुझाने को
मगर मैं काँटे चुनता रहा,
मैंने ख़ूबसूरती चुनी ही नहीं
यानी की मैं जिया ही नहीं,
लुत्फ़ ज़िंदगी का लिया ही नहीं।

क्या कहेंगे चार लोग
जाने कहाँ थे वो लोग
जो चलते रहे संग संग
ताने सुनाने को

लगाम लगाने को
परवाज़ भुलाने को
हँसना बिसराने को
पाँवों में लिपटकर
बस मुझे गिराने को
मगर.......
ताउम्र लोग अच्छे ही मिले,
ज़्यादातर
किसी ने ताने नहीं मारे
रहे हरदम आसपास सारे
मदद करते ढूँढने को किनारे
किसी ने गिराया भी नहीं,
डुबाया भी नहीं।
मगर मैं ढूँढता रहा वही चार लोग,
जो कहीं थे ही नहीं
यानी की मैं जिया ही नहीं,
लुत्फ़ ज़िंदगी का लिया ही नहीं।

ये होगा तो क्या होगा
वो ना हुआ तो क्या होगा
वो कर लेगा तो क्या होगा
मुझसे होगा या नहीं होगा
ना जाने कितने ऐसे सवाल
करते रहे ज़हन में बवाल
करता रहा मगर मैं ख़ुद से लगातार
जवाब माँगता रहा मैं ख़ुद से हर दिन
खुद को नोचता रहा मैं दिन गिन गिन।

मगर सवाल थे ही नहीं हक़ीक़त,
सो जवाब मिला भी नहीं
यानी की मैं जिया ही नहीं,
लुत्फ़ ज़िंदगी का लिया ही नहीं।

“ख़ुद-कलामी”

“ख़ुद-कलामी”का जी चाहा आज मेरा
सो कागज पर मैंने “ख़ुद-बरबाद”लिख दिया।
जुदा होते वक़्त वो उसकी इल्तिज़ा कुछ कहने की
सो मैंने कानों में उसके तू रहे आबाद कह दिया।
सवाल पूछते हैं लोग मेरे दामन के छींटों पर
सो मैंने इस जहां में कोई कैसे रहे बेदाग़ कह दिया।
मैं जो हूँ मैं दिखता नहीं वैसा, कहते हैं लोग
सो मैंने आईना उनकी तरफ़ कर दिया।
अभी मैं मरा नहीं था, थी मुझमें जान बाक़ी
किसी ने मेरी क़ब्र पर “मर गया साला” लिख दिया।
मेरे यार मुझे ख़र्च के पूछते हैं कुछ बचा है क्या
सो मैंने अभी लूटा ही है क्या तुमने यारों कह दिया।

“मुझे सफ़र करना है”

नफ़रतों के शहर तक मुझे सफ़र करना है अब
मोहब्बतों के शहर से मेरा दिल भर गया है अब।
उसको समझाने से कोई फ़ायदा नहीं
पहले सा वो मुझे कहाँ समझता है अब।
मेरा किरदार कहानी में यहीं तक था काम का
चलो चलें कहानी से हम निकलते हैंअब।
हर नये दिन में यहाँ जीने जैसा कुछ नहीं
बस एक दिन मर जाने के लिए जी रहे हैं अब।
शाख़ों पर से उड़कर गया था जो परिंदा कभी
ज़मीन तलाशता है आजकल, पंख थक गए हैं अब।
तेरे वादों पर अब कोई करे एतबार, मुझे क्या
तेरे वादों पर से एतबार मेरा उठ गया है अब।
ज़ख़्म कुरेदने आना है तो बेशक आ जाओ
वैसे तो तेरा दिया ज़ख़्म भर ही चला है अब।
वो जो गले लगा करते थे तपाक से कभी
अकस्मात् मिलने पर नज़र चुरा लेते हैं अब।

“गुमान मत रख”

ना रख कोई गुमान,तू कहाँ तक इतराएगा
मौसम आने दे पतझड़ का,तू भी बदल जाएगा।
अब तलक जो नहीं बिका है बाज़ार में
क़ीमत सही लगने तो दो, बिक जाएगा।
फिर वही क़िस्सा दोस्ती का दोहराया जाएगा
मतलब निकल जाने पर हर एक निकल जाएगा।
तू जी ले आज अभी इस वक़्त को
वक़्त आज तेरा है,वक़्त कल तेरा भी बदल जाएगा।
रूठकर क़ाफ़िले से ये कौन खड़ा है किनारे
समझाओ कोई इसे,अकेला रहा तो मर जाएगा।
ना कर तसल्ली के अपनों ने महज़ ज़ख़्म दिये हैं
भरोसा रख वो ज़ख़्म पर नमक छिड़कने भी आएगा।
वो जो बैठे हैं आँखें फोड़कर सूरज को ताकने में
अब तुम्हें जुगनू भी कहाँ तक रोशनी दिखलाएगा।

"जीवन सफ़र"

मैं चला हूँ देर से, मैं धीरे-धीरे चल रहा हूँ
भँवर के बीच नहीं, मैं तीरे तीरे चल रहा हूँ
तुम पहुँचोगे जहाँ मुझसे पहले या बाद में
यक़ीं जानिये मैं सफ़र वहीं का कर रहा हूँ।

जो थे हाथ ख़ाली, अभी उनको भर रहा हूँ
दिलकश नज़ारों से मैं अभी गुज़र रहा हूँ
रीतेगें हाथ सबके ही देरी से या जल्दी से
जानता हूँ फिर भी मुट्ठी में रेत भर रहा हूँ।

फ़िक्र आज कल की, मैं जी भर कर रहा हूँ
ना हैं जो ठिकाने मेरे, मैं उनपर ठहर रहा हूँ
लोग मिलते ही हैं बिछड़ने को इस दहर में
जानता हूँ फिर भी मैं परछाईं पकड़ रहा हूँ।

“संकुचित मन”

ये तो मुझको याद नहीं
कब मैंने तारीफ़ें की थीं
तारीफ़ें जो सच्ची हों
या फिर के झूठी भी
क्रोध मगर मैं कर लेता हूँ
मौका चाहे जैसा हो
संकोच नहीं करता लड़ने में
आँखों से ज़ाहिर करने में
ठिया-ठिकाना चाहे जैसा हो।

स्वर भी कितने ऊँचे होते हैं
जब हम लड़ने में होते हैं
शब्द नहीं कम पड़ते हैं
संकोच नहीं अपशब्दों से भी
छलनी जब हम मन करते हैं।

क़द काठी की तो सुध रहती, किसको
बस लड़ना है तो लड़ पड़ते हैं
सुने वही क्यों जिससे ग़ुस्सा है
सभी सुने वो दम भरते हैं।

ओज, तेज़, तेज़ाब नसों में
हम रह रहकर भरते हैं

बुरा लगे हद तक भी उसको
जिसको हम चिन्हित करते हैं।

चरित्र हनन करते हम हक़ से
मान मलिन कर दें हम झट से
रह रह सीना चौड़ा करते हम
मौक़ा लगते धर देते हैं।

जीत मेरी हों और बस मेरी हो
हार हमें मंज़ूर नहीं
क्रोध भूमि के काँटे चाहे
ख़ुद के कर छलनी करते हों।
मन फिर विचलित रहे जो घंटों
इसकी तो परवाह किसे
अंजाम अभी पर मेरे पाले में हो
बस इसकी चाहत रखते हैं
भला बुरा चाहे जो हो, देखेंगे
मन में बस अभिमान भरें
क्रोध करेंगे, क्रोध करेंगे
मिल-जुलकर हम शपथ धरें।

कितना मुश्किल होता है ना
भाव कोई भी यूँ ही कह देना
देखो तारीफ़ें करते मन कितना
सकुचाता है,
क्या सोचेगा सम्मुख व्यक्ति
सोच के दिल घबराता है
अपनों की करते भी देखो

दिल कितना छोटा होता है
बात परायों की हो तो
शब्दों का भी टोटा होता है।

अभी नहीं फिर कर दूँगा
यहाँ नहीं वहाँ कर दूँगा
नहीं कहूँगा, लिखकर दूँगा
नहीं करूँगा तो चल जाएगा
कर दूँगा तो इतरायेगा
कर कर भी मुझको,
क्या मिल जायेगा
इसकी तो तारीफ़ें होंगी
मेरा क़द घटता जायेगा
लाख सवालों से घिरते हम
आख़िर खुद को छल लेते हैं
तारीफ़ों की इस भूलभुलैया से
चुपके से हम टल लेते हैं।

मगर नहीं ये इतना भी मुश्किल
करके देखो अच्छा लगता है
खुले मनों से, खुले दिलों से
देखो तो हर दिल सच्चा लगता है
भले नहीं करना तुम झूठी
सच्ची तो कर सकते हो
खुलकर बोलो और दिखला दो
तुम भी क़द ऊँचा रखते हो।

बात करें ग़र प्यार की
क्या खुलकर कह पाते हैं?
अपनों को कब गले लगाया
ज़रा सोचकर देखो तुम
झिड़क विड़क देते हम खुलकर
पर प्यार नहीं कह पाते हैं
प्यार करें तो छुपकर!
प्यार कहें तो छुपकर
ये भी क्या बात हुई!
प्यार व्यार की प्यारी बातें
करते हम क्यूँ घबराते हैं।

कहने का ढंग रखते हो तो
खुलकर तुम इज़हार करो
हर रिश्ते से हरपल हरदिन
प्यार-प्यार है, प्यार-प्यार है
प्यार-प्यार बस प्यार प्यार है
ऐसा बारंबार कहो।

भाव कोई हो खुलकर बोलें
क्रोध करें तो मन को तौलें
बस इतना उपकार करें
जीकर देखें ऐसे भी
जीवन के तार तार झंकार करें।
बात करें और कह डालें
मन की जो अभिलाषा हो
सुगम, सरल, सुलभ जीवन सपने को
मिल-जुलकर साकार करें।

“सच के काँटे”

क्या सच सिर्फ़ तुम बोल सकते हो?
वो भी मेरा!
हाँ शिकायत है मुझे तुमसे
और कर भी रहा हूँ, शिकायत
गौर से सुनना
मैं तुम्हीं से कह रहा हूँ।

हाँ चुभते हैं मुझे ये सच्चे काँटे
तो क्या हुआ जो मेरे हैं, मगर
बींध देते हैं मेरे अभिमान को, ग़ुरूर को
स्वाभिमान तो मैंने ख़ुद ही कुचला है।

लहू रिसता है तुम्हारे दिये ज़ख़्मों से
अब ज़ख़्म किसे पसंद हैं
वो भी रिसते हुए,
मवाद भरे,
सड़ांध मारते हुए, बजबजाते से
फिर परेशान करती हैं मक्खियाँ भी
हरदम भिनभिनाती रहती हैं
तुम्हारे दिये घाव पर,
क्या तुमको नहीं दिखते ये घाव
जो हर दफ़ा चुन लाते हो नए शूल

घाव कुरेदने को!
कभी झूठ का मरहम भी रख कर देखना
मैं कितने सुकून में रहूँगा
ख़ुद का ख़ुद से सामना मुझे नहीं करना
देखो तुम अब मेरा वाला सच नहीं कहना।

मगर एक सवाल भी है तुमसे
क्या तुम चुनते हो कभी
ख़ुद के भी काँटे?
या बस हाथ तुम्हारे हुए हैं ज़ख़्मी
दूसरों के काँटे चुनने में
क्या ये काँटे तुम्हें नहीं चुभते
या तुम में काँटे हैं ही नहीं
क्या कहा नहीं हैं!
तब तो तुम सच्चे नहीं हो
फूल ही फूल हैं तुम में,
शूल कहाँ है
तुम ज़रा अब बतला दो
तुम्हारा वाला सच कहाँ है।
तुम्हारा वाला सच कहाँ है।

“एक सपनों का गाँव”

एक हमारा गाँव हो
पीपल पेड़ की छाँव हो
दूर जाती पगडंडी हो
चलते उस पर पाँव हों।

कदम थकाती जोत हो
राह रोकते खेत हों
दो सुकून के कौर हों
चाहे प्याज़ से खाते हों।

प्यास बुझाती नहर हो
खलिहानों की लहर हो
लोकगीतों की बहर हो
मुहावरों का असर हो।

बड़े बुज़ुर्गों से शजर हों
नज़र उतारती नज़र हों
धूप बताती गजर हो
ख़ुशी से बीतते पहर हों।

चूल्हे की रोटी हो
पतली हो या मोटी हो

मिलकर खाते लोग हों
सब बतियाते लोग हों।

समय बिताते लोग हों
कथा सुनाते लोग हों
संस्कार पगाते योग हों
हर पल होते संजोग हों।

तीज त्यौहार एक हों
सभी मानते लोग हों
आशीर्वाद देते लोग हों
सब बच्चे पाते नेग हों।

झगड़े सारे फेक हों
गले लगते लोग हों
सुख भी सबके एक हों
दुःख में जुटते लोग हों।

“कैसा है दोस्त”

रूठता दोस्त, मनता दोस्त
ख़फ़ा दोस्त, वफ़ा दोस्त
तना दोस्त, अनमना दोस्त
हँसता दोस्त, हँसाता दोस्त
संभलता दोस्त, संभालता दोस्त
रंगीला दोस्त, बेरंगा दोस्त
बेढंगा दोस्त, अतरंगा दोस्त
होश भी दोस्त, मदहोश दोस्त
इस तरह दोस्त, उस तरह दोस्त
हर तरह दोस्त, जैसा भी दोस्त
दोस्तों का दोस्त, तू रहेगा दोस्त।

"उलझन घड़ी के काँटों से"

बड़ी उलझन है मुझे
घड़ी के काँटों से
हर वक़्त चलते रहते हैं
मुझसे आगे
ना जाने किस दौड़ में हैं
किधर जाना है

मेरे जागते में चलते हैं
सोते में भी चलते रहते हैं
मैं थक जाता हूँ
मगर ये नहीं थकते
सोचता हूँ आज कदम मिलाऊँगा इनसे
मगर हो नहीं पाता
मिनट का पकड़ो तो
सेकेंड का निकल जाता है
पलक झपकते लम्हा बदल जाता है।

कितना कुछ संग ले जाना है
मगर काँटों से भी कदम मिलाना है
सो छूटता जाता है
सब कुछ जोड़ा हुआ
फिर सफ़र करता हूँ ख़ाली हाथ

कुछ और पाने के लिए
काँटों के संग जाने के लिये।

कुछ देर पहले थे कुछ लोग साथ
अब ना जाने कहाँ गए
छूट गए हैं काँटों की जल्दबाज़ी में
काँटे क्यूँ सौदेबाज़ी नहीं करते
शायद आगे नए मिलेंगे
पर क्या वे क़ायम रहेंगे?
या फिर समय की भेंट चढ़ेंगे।

सब कुछ लुटवाकर काँटे थमेंगे!
क्या तब भी थमेंगे??
नहीं थमेंगे,
ये चलते रहेंगे
मेरे साथ भी
मेरे बाद भी।
फिर नये फँसेंगे इनके फेर में
चलते जाने को
सब कुछ लुटाने को
भ्रम है कि ज़िंदगी बिताने को।

“दोस्ताना”

नदी की रवानगी सा दोस्त
आसमान की बानगी सा दोस्त
दोस्ती की दीवानगी सा दोस्त
भँवरे की आवारगी सा दोस्त
गुलों की सादगी सा दोस्त
पहाड़ों सी बुलंदगी सा दोस्त
दरख़्तों की कलँगी सा दोस्त
बंदों की बंदगी सा दोस्त
जिंदों की ज़िंदगी सा दोस्त
बस यूँ ही रहो तुम मेरे दोस्त
बस यूँ ही रहना तुम मेरे दोस्त।

“दौर-ए-उम्र”

ज़रा बालों में है चाँदी, ये बत्तीसी गिर भी सकती है
मगर दिल तो जवाँ अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा चलते कदम थकते, तो साँसें फूल जाती हैं
नसों में है मगर मस्ती वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
बिना चश्मे के देखूँ तो तस्वीरें धुँधला सी जाती हैं
बंद आँखों में मगर सूरत वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा झुर्री हैं चेहरे पर, उमर दिख सी भी जाती है
तेरे आने से चेहरे पर चमक आती वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा कंधे भी झुक गए है, कमर भी झुक सी जाती है
मगर छाती तो चौड़ी है वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
है थोड़े गाल भी पिचके, लटकन होंठों पर आ सी जाती है
मगर वो स्वाद जुबां पर है वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा कुछ भूल जाता हूँ तो यादें आ भी जाती हैं
मगर तेरी यादें ताज़ा हैं वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा कुछ लिखने जाओ तो उँगलियाँ काँप जाती हैं
अगर तू हाथ थामे तो मिले ताक़त वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा सा हाज़मा भी है गड़बड़, भूख भी मर सी जाती है
मगर तेरी बक बक पचा सकता हूँ वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।
ज़रा ताक़त भी कम सी है, तू उठती तो नहीं दिखती
हाँ तू मोटी है वही अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।

ना है अब कोई ज़िम्मेदारी, समय भी खूब है मुझ पर
आ बैठेंगे गार्डन में वहीँ अब भी, मोहब्बत हो भी सकती है।

“जीवन झमेला”

आग़ाज़-ए-सफ़र से संग रहा था मेला
अंजाम-ए-सफ़र मे मैं रह गया अकेला।
कुछ रिश्ते बिछड़े, कुछ नाते बिछड़े
बिछड़ गया कुछ मन भ्रम का खेला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ कच्चा बिछड़ा, कुछ अच्छा बिछड़ा
बिछड़ गया सब मन का मैला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ सच्चा बिछड़ा, कुछ झूठा बिछड़ा
बिछड़ गया सब झोल झमेला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ क़समें बिछड़ी, कुछ वादे बिछड़े
बिछड़ गया सब संगों का डोला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ अपने बिछड़े, सब सपने बिछड़े
बिछड़ गया सब रेलमपेला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ यारी बिछड़ी, सब बीमारी बिछड़ी
बिछड़ गया सब मस्तों का टोला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ गहरे बिछड़े, कुछ उथले बिछड़े

बिछड़ गया सब सजा सजीला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ अब के बिछड़े, कुछ कब के बिछड़े
बिछड़ गया सब बाद या पहला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ बिछड़ी राहें, कुछ बिछड़ी बाँहें
बिछड़ गया सब काँटा कीला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
सफ़र चले कुछ चलते बिछड़े
अब जाकर कुछ थमते बिछड़े
बिछड़ गया सब सुस्त या ढीला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।
कुछ उजला बिछड़ा, कुछ कजला बिछड़ा
बिछड़ गया सब रंग रंगीला
अंजाम-ए-सफ़र में, मैं रह गया अकेला।

"पैर रहें ज़मीन पर"

ज़मीं की ये जड़ें मुझको फ़लक तक उड़ने नहीं देतीं
भली हैं ये फ़िक्रमंद उड़ानें मुझे ऊँचा उड़ने नहीं देतीं।
मैं देखता हूँ उसको वो मुझको देखती होगी
मगर हाय हया कैसी जो आँखें लड़ने नहीं देती।
हों ग़ुस्सा लाख चाहे हम एक दूजे से लेकिन
वो मासूमियत बच्चों की हमें लड़ने नहीं देती।
सफ़र में हरदम तुम मेरे साथ ही रहना
बस एक यही क़सम उसकी हमें बिछड़ने नहीं देती।
ना जाने साथ तुम मेरे ख़ुश भी हो या नहीं लेकिन
शिकन की एक भी रेखा जबीं पर तुम पड़ने नहीं देती।
मेरे पापा तो हीरो है, मगर क्यों किसी से नहीं लड़ते
तुम्हें क्या बतलाऊँ मेरी बेटी, ये ज़िम्मेदारी अकड़ने भी नहीं देती।
है जीवन लावे की भट्टी जलाने पर जो है आमादा
पिता की शीतल सी छाया, असर पड़ने नहीं देती।
बलाएँ लाख आती हैं मेरे सर पर भी लेकिन
दुआएँ माँ की हैं मेरी असर पड़ने नहीं देती।

“अशांत मन”

बस यही सोचकर दिल परेशान सा है
मेरे अंदर भी एक शख़्स अनजान सा है।
हो रहा है शोर, चारों तरफ़ है लोग मगर
यहाँ हर दिल में पसरा एक बियाबान सा है।
वक़्त के साथ मुझे बदलता देखकर
है ठिठका हुआ लम्हा, ज़रा हैरान सा है।
मेरे कमरे में कोई रोया है कल रात भर
देखो यहाँ पड़ा एक शख़्स लहूलुहान सा है।
मेरी बज़्म से जाने वाले तेरा ख़ुदा हाफ़िज़
चले जाने में मगर तेरा कुछ नुक़सान सा है।
मेरे बिना भी जो जीने का दम भरता था
सुना है आजकल वो शख़्स परेशान सा है।
तुम जो खुद को खुदा समझते हो कोई नई बात नहीं
यहाँ आजकल हर कोई छोटा मोटा भगवान सा है।

"अच्छा लगता है"

यूँ ही कहीं दूर तक चलते जाना अच्छा लगता है
यादों के संग उँगलियाँ उलझाना अच्छा लगता है।
यूँ तो वो मान सकती है झट से भी लेकिन
मनते मनते उसका देर लगाना अच्छा लगता है।
रुख़ हवाओं के पता चल जाते हैं यूँ भी लेकिन
मुट्ठी भर रेत उड़ाकर पता लगाना अच्छा लगता है।
तुम भेद करा लो चाहे जितना इंसानों में
हमको तो मंदिर, मस्ज़िद, गुरुद्वारे जाना अच्छा लगता है।
प्यार व्यार में धोखा वोखा मिलता रहता है
हमको तो बस दिल लगाना अच्छा लगता है।
तुम्हें मुबारक हो ये मंज़िल, फ़ुरसत से बैठो
हमको तो बस दरिया दरिया प्यास बुझाना अच्छा लगता है।
तुम ही सिमटो, तुम्हीं समेटो, तुम ही जोड़ो ख़ुद को
हमको तो बस किश्तों में चुक जाना अच्छा लगता है।
भले समंदर नहीं बाट जोहता अपनी लहरों की
हमको तो बस साहिल पर से लहर लौटाना अच्छा लगता है।
यूँ तो दिन बीतेंगे तारीख़ तारीख़ ख़ुद ही से ही
हमको तो बस कैलेंडर के पन्ने पलटाना अच्छा लगता है।
छोटे छोटे दिल के लोग बड़े हों लेकिन
हमको तो बस उनके दिल में घर कर जाना अच्छा लगता है।

तुम्हें मुबारक यूँ ही चढ़ता ढलता सूरज हर दिन
हमको तो बस यारों के संग सूरज लुढ़काना अच्छा लगता है।
नज़र मिलाकर कैसे कर लेते हो तुम उनसे दिल की बातें
हमको तो बस नज़र चुराकर बात बताना अच्छा लगता है।
धरती पर की खिंची लकीरें तुम्हें मुबारक
हमको तो बस पंछी सा उड़ जाना अच्छा लगता है।
बात बात पर बात बात अब क्या बतलायें हम तुमको
नादानों को भी क्या समझाना अच्छा लगता है।
तुम्हें मुबारक सैर गगन की और चंदा से गलबहियाँ
हमको तो बस टूटे तारों से बतराना अच्छा लगता है।
नंगी प्यासी तलवारों की प्यास बुझाकर, तुम घर घर को आना
फिर देखो क्या उजड़ा आशियाना अच्छा लगता है।
सफ़र करें और तन्हाई में कटना हो, ऐसा ना हो
भले क़ाफ़िला भीड़ भरा हो पर अच्छा लगता है।
तुम्हें मुबारक रोशन बस्ती चिंगारी से
हमको तो घर घर जाकर दिया जलाना अच्छा लगता है।
तुम गले मिलो और बाँहों में कस लो, किसे चाह है
हमको तो बस तेरा यूँ ही दिख जाना अच्छा लगता है।
काम वाम अब कौन करे सो हमको तो आराम मुबारक
हमको तो बस घड़ी के काँटों को सरकाना अच्छा लगता है।
हर साल नहीं कुछ ख़ास है जुड़ता तारीख़ों में मेरी
हमको तो बस साल बदलना अच्छा लगता है।
ख़्वाहिश भी अब मर ही जायें तो अच्छा है
हरदम उनको ज़िंदा दफ़नाना क्या अच्छा लगता है।
रूठे रूठे तुम बैठे हो बोलो तो तुम क्यों रूठे हो
किसी दोस्त का यूँ चुप हो जाना क्या अच्छा लगता है।

सड़कों पर तो भीड़ पड़ी है दौड़ बड़ी है
हमको तो बस फुटपाथों पर आहिस्ता चलना अच्छा लगता है।
दो साँसें जीने की ख़ातिर बस तुम चलते रहते हो
कहीं ठहरकर तुम देखो, थोड़ा सुस्ताना अच्छा लगता है।
बड़े बड़ों की बड़ी सी बातें बड़े ही जानें
हमको तो बस बच्चा बन जाना अच्छा लगता है।

"ये नया साल है प्यारे'

नव चेतन, नव निश्चय, नवारंभ
का दिन है प्यारे
चलो उठो, नव जीवन में झांको
ये नया साल है प्यारे।

अंधियारे को मत पगने देना
अब नया चाँदना उगने देना
तम, तिमिर और ताप को छाँटो
ये नया साल है प्यारे।

पथरीली राहें और काँटे पग पग
अब आते हैं तो आ जायें
हर शूल, शिला और शाप को छाँटो
ये नया साल है प्यारे।

रणभूमि में शमशीर गिरे तो मत घबराना
तुम बाज़ू बाज़ू तलवार करो
समर शेष है, गरजो अब तुम रणबांको
ये नया साल है प्यारे।

लहू माँगती अब कर्मभूमि है
तुम बूँद बूँद नयौछार करो

नव ऊर्जा के पुंज बनो तुम,
अब आलस को छाँटो
ये नया साल है प्यारे।

जो छूट गया सो छूट गया
जो बीत गया सो बीत गया
जाने भी दो यारों
हर कही सुनी और गिले शिकवों को
अब मिट्टी से पाटो
ये नया साल है प्यारे
ये नया साल है प्यारे।

“रह ही गया”

बस ज़रा कुछ फ़ासले से हमारा प्यार रह ही गया
लबों पर बस तेरे मेरे अनकहा इकरार रह ही गया।
बेक़ाबू वो धड़कनें तुमने भी सुनी और मैंने भी
निगाहों से मगर जो ना हुआ वो इज़हार रह ही गया।
दूरियाँ दरमियाँ हमारे बस कुछ क़दमों की ही थीं
क़दमों में मगर तेरे मेरे चलने का इंतज़ार रह ही गया।
आगे के सफ़र में सुकून जैसी कुछ बात ही ना मिली
दिल जो बेक़रार था तेरा मेरा, बेक़रार रह ही गया।
फिर ज़रा सोचकर तो देखो फ़ुरसत में
कहानी में दरकार-ए-सुधार रह ही गया।
हमारी बिछुड़न का गवाह वो मोड़, स्तब्ध आज भी है
चलो कम से कम चलकर करें इनकार जो रह ही गया।
कहानियाँ कुछ अधूरी ही होती हैं मुकम्मल, कहते हैं लोग
चलो अच्छा है तेरा मुझ पर मेरा तुझ पर कुछ उधार रह ही गया।

"तो कुछ बात करूँ"

तुम ज़रा सुनो तो कुछ बात करूँ
तुम ज़रा थमो तो कुछ बात करूँ।
मंज़िलों की चाहत हो तुम ये सभी जानते हैं
रास्तों की राहत बनो तो कुछ बात करूँ ।
मौत का ख़ौफ़ क्या दिखाना मरे हुए को
ज़िंदगी की सौग़ात लाए हो तो कुछ बात करूँ।
तेरी उड़ानें तो ज़माना देख चुका है
ज़मीं पर लौट आए हो तो कुछ बात करूँ।
तुम ख़ुद ही में समाये रहते हो हमको पता है
टूटकर बिखरने आए हो तो कुछ बात करूँ।
ज़ख़्म हरदम हरे रखते हैं दस्तूर ज़माने के
तुम जो मरहम लाये हो तो कुछ बात करूँ।
सन्नाटे तो मेरे इर्द गिर्द यूँ ही बिखरे पड़े हैं
तुम जो गर शोर लाये हो तो कुछ बात करूँ।
दिल मेरा सुकून में है मुद्दतों से
तोड़ने आए हो तो कुछ बात करूँ।
दिखावे की मोहब्बतों के तो बाज़ार लगे हैं
सच्ची नफ़रतें लाये हो तो कुछ बात करूँ।
भरोसा जीतकर तो मेरा, एक क़ाफ़िला गुज़र गया
तुम जो गर तोड़ने आये हो तो कुछ बात करूँ।
छोड़कर मुझे राहों में तो वो भी गुज़र गया
तुम जो ज़िंदाँ लाये हो तो कुछ बात करूँ।

“ख़ुद से उलझन”

मैं खुद से कितना उलझा रहता हूँ
क्यूँ मुझको खुद से उलझन सी नहीं होती।
ख़्वाब, खुशबु, रंगत सब कुछ तो है बाहर
क्यूँ मेरी तबीयत तफ़रीह की सी नहीं होती।
मैं हरदम खुद से मात खाता रहता हूँ
क्यूँ मुझमें जीत जाने की हसरत सी नहीं होती।
अंधेरे कितने बेस्वाद हैं मेरे फिर भी
क्यूँ मेरे उजालों में लज़्ज़त सी नहीं होती।
सुनहरी धूप चखने को मयस्सर है मुझे, फिर भी
क्यूँ मेरे पैमाना-ए-उज़लत में हरकत सी नहीं होती।
मैं खुद को भूल जाने की दहलीज़ पर आ पहुँचा हूँ, लेकिन
क्यूँ खुद को याद रखने की मुझमें हरकत सी नहीं होती।
मैं प्यासा हूँ सहरा से कहीं ज्यादा, लेकिन
क्यूँ इन आँखों के दरिया को पीने की हिम्मत सी नहीं होती।
ना जाने कितने ख़्वाब तैरते हैं इन आँखों में, लेकिन
क्यूँ कश्ती मँझधार में तैराने की हिम्मत सी नहीं होती।

“स्कूल अभी तो चलना होगा”

रिंकी-पिंकी, गोलू-बंटी और भोला
चलो उठायें मिल-जुल हम मस्ती का झोला
ज्ञान दीप की बुझती लौ से,
तिमिर सभी को हरना होगा
हर घर से हर बच्चे को,
स्कूल अभी तो चलना होगा।

पढें लिखें, खेलें कूदें और मचायें हल्ला गुल्ला
खेल खेल में सब खा जायें शिक्षा का रसगुल्ला
ज्ञान फुहार की रिमझिम बारिश में,
अज्ञान का बंजर सींचना होगा
हर घर से हर बच्चे को
स्कूल अभी तो चलना होगा।

नहीं डरेंगे सभी पढेंगे
मिल जुल हम पुस्तक का पन्ना पन्ना
हों फिर चाहे शर्मा-वर्मा, खान-हेडली या फिर खन्ना
जाति धर्म और भेदभाव की
दीवारों को अब गिरना होगा
हर घर से हर बच्चे को
स्कूल अभी तो चलना होगा।

गणित-वणित, हिन्दी-इंग्लिश और विज्ञान कठिन हैं, सब बातें हैं
आ जाओ हम सब मिल जुलकर इनको सुलझाते हैं
हर एक विषय की हर बारीकी को,
बारीकी से पढ़ना होगा
हर घर से हर बच्चे को
स्कूल अभी तो चलना होगा।

पढ़ लिख कर हम सभी बढेंगे, शिक्षित होंगे
अंधियारे जीवन के सब, दूर हम अभी करेंगे
फिक्र मिटाने रोजी रोटी की
विद्या अर्जन करना होगा
हर घर से हर बच्चे को
स्कूल अभी तो चलना होगा।

“मोहब्बत अभी और होगी”

तुम मेरा प्यार हो,
अभी मगर आख़िरी नहीं
राह-ए-मंज़िल में मिलेंगे
हसीन और भी
तुम मेरा क़रार हो,
अभी मगर आख़िरी नहीं।

तुम मेरी बहार हो,
अभी मगर आख़िरी नहीं
बियाबां-ए-दिल में,
तेरे आने-जाने से
उठता तो एक ग़ुबार है
अभी मगर आख़िरी नहीं।

तुम मेरा इक़रार हो,
अभी मगर आख़िरी नहीं
राह-ए-मोहब्बत में आएँगी
अभी इल्तिजायें और भी
तुम मुझे स्वीकार हो
अभी मगर आख़िरी नहीं।

“सोचता हूँ एक कहानी लिखूँ मैं”

सोचता हूँ एक कहानी लिखूँ मैं
मगर किसकी!
मगर किसकी लिखूँ मैं
खुद की ख़ुद ज़ुबानी
या तेरी, तेरी ज़ुबानी लिखूँ मैं
मेरी, तेरी ज़ुबानी
या तेरी, मेरी ज़ुबानी लिखूँ मैं
सच लिखूँ या अफ़साना लिखूँ
किरदार कोई अपना या बेगाना लिखूँ मैं
प्यार लिखूँ या रूठना मनाना लिखूँ
या फिर ज़िंदगी जीने का कोई बहाना लिखूँ मैं।

रंग बिरंगी या बेरंगी लिखूँ
या फिर कहानी कोई अतरंगी लिखूँ मैं
स्त्री की लिखूँ या पुरूष की लिखूँ
स्त्रीत्व या फिर पुरुषत्व की लिखूँ मैं
अस्त्र की या फिर शस्त्र की लिखूँ
ज्ञान की या फिर शास्त्रार्थ की लिखूँ मैं।

दुलार, पुचकार या स्वार्थ की लिखूँ
सेवा, त्याग, परिश्रम या परमार्थ की लिखूँ मैं
जोश, खरोश या होश की लिखूँ

या फिर किसी मदमस्त मदहोश की लिखूँ मैं
वायू, अग्नि, जल, धरती, पाताल या आकाश की लिखूँ
या फिर की सुर्ख़ चटक पलाश की लिखूँ मैं।

भरे पेट, सुख से लबरेज़ लोगों के दुख लिखूँ
या फिर की कुपोषित भूखी भूख की लिखूँ मैं
हर पल गिर रही लाशों की लिखूँ
या फिर की गैरों में अपनों की तलाशों की लिखूँ मैं
कसमों, वादों और इरादों की लिखूँ
या फिर की अपवादों की लिखूँ मैं।

गालियों से भरी कोई अभद्र लिखूँ
या फिर किसी काले मन के भद्र की लिखूँ मैं
रोती, बिलखती सिसकियां लिखूँ
या फिर की प्रेम में पगीं मीठी चुस्कियां लिखूँ मैं

क्षितिज पर उगता सूरज लिखूँ
या फिर की डूबता सूरज लिखूँ मैं
चांद तारों का साथ लिखूँ
या फिर की घनघोर घटा बरसात लिखूँ मैं।

ललाट, नयन, कपोल या अधर का बंधन लिखूँ मैं।

राह, मोड़ या मंज़िल लिखूँ
या फिर की हसीं ये सफ़र लिखूँ मैं
थकना, थमना, रुकना या विफल लिखूँ
या की गिरना, उठना, फिर चलना और सफल लिखूँ मैं।

नए, नवेले, रंगीन मकानों की लिखूँ
या फिर की बुज़ुर्ग सयानों की लिखूँ मैं।

चलो तुम्हारी लिख देता हूँ
भावों के उन मर्मों को शब्दों से रंग देता हूँ
तुम जो खुलकर कहना चाहो
वो मैं दुनिया से कह देता हूँ।

तेरी जुबां में कह तो दूँगा
मगर क्या तुम पूरे खुल पाओगे
काले, कलुषित मन के पन्ने
भी क्या तुम मुझको दिखलाओगे।

भला भला ही लिखना है
तो मैं ना लिख पाऊंगा
तुम जैसे हो गर वैसे ही
दिखना चाहो इन पन्नों पर
मैं तभी कलम चलाऊंगा।

घटित हुए कालखंड की एक एक बारीकी
क्या तुम मेरी कलम में भर पाओगे
खुद का गंदला अक्स देखकर
तुम घबरा तो ना जाओगे
सच सच बोलो
क्या तुम सच में ख़ुद का
सब सच सच बतला पाओगे।

गर तुम सब सच बोलोगे
तो नहीं ज़रुरत मेरी होगी
धड़क रहे जो तेरे अंदर
उन मन के भावों को
मैं क्या स्पंदन दे पाऊँगा
तू तेरा खुद का लिखना
मैं बस पढ़ता जाऊँगा।

चलो मैं अपनी लिख देता हूँ
मगर शर्त अभी भी वही है मेरी, खुद से
क्या मैं ख़ुद का सच्चा विश्लेषण कर दूँगा, खुद से।

कितने ही किरदारों का घर हूँ मैं
क्या कर पाऊँगा मैं सच्चा चित्रण
इन किरदारों का, खुद से
खुद को मैं गर गुलाब कहूँगा
तो मुझको कांटों से बिंधना होगा, ख़ुद से।

मेरे कई सच हैं, जो बैठे हैं मुझमे छुपकर
क्या मैं उन सबको पन्नों पर ला पाऊँगा, ख़ुद से
झूठे मक्कार मेरे इस चेहरे को
क्या मैं आईना दिखला पाऊँगा, ख़ुद से।

काले मन की काली बातें
क्या हो जो खुलकर आ जायें
क्या मैं ख़ुद को सूली पर
लटकापाऊँगा, खुद से।

जो मैं ख़ुद ही को
आईना ना दिखला पाऊँ
तो फिर बेहतर होगा की
मैं नहीं लिखूँ ख़ुद को, ख़ुद से।
चलो तो फिर संकेतों में लिख देते हैं
पात्र कोई कई काल्पनिक से चुन लेते हैं।

कितनी आसानी सी होगी लिखने में
पात्र कई रंगों के मनमुताबिक गढ़ने में
कभी इसकी, कभी उसकी
छीछालेदर करने में।
कहते होंगे अपनी ही
पर खुद को छलने में।

गंदी, अच्छी सब तो कह लेंगे
कहीं बोल होंगे जो मीठे
तो कहीं कहीं पर गरिया लेंगे
मन की कुंठाओं और विछिप्तताओं को
हम आकार दे पायेंगे
चूँकी पात्र काल्पनिक हैं
सो पूर्ण नग्नता दिखलायेंगे।

लिखने, पढ़ने, सुनने वाले
सभी तो खुश ही होंगे
और पात्र निकलकर पन्नों से
मेरा कर भी क्या लेंगे

और कोई कहीं गर ज्यादा बोला
तो किरदार कहानी में ना होगा
पन्नों में मुर्दा सा होगा
मगर रवानी में ना होगा।

मगर लोग नहीं हैं इतने सीधे
वे सब पढ़ते ही समझेंगे
और किरदार कहानी के वे सारे
मेरे व्यक्तित्व पर जड़ ही देंगे
सवाल कई वो पूछेंगे
पर मैं जवाब नहीं दे पाऊँगा
वो सब तो सच ही कहते होंगे
पर मैं ये सब उनको कैसे बतलाऊंगा।
इसका मतलब मैं
एक कहानी काल्पनिक ना लिख पाऊँगा।
सोचता हूँ एक कहानी लिखूँ
मगर किसकी!
सोचता हूँ एक कहानी लिखूँ
मगर किसकी!

“दोस्त मेरे अब भी हैं”

कुछ भरम बना रहे सो तुम दिखावा करते रहना
गाहे बेगाहे यारों की गली से गुज़रते रहना।
लोग कसमें उठाते हैं आज भी हमारी यारी की
निभाने के लिये ना सही, दिखाने के लिये मिलते रहना।
दिलों में हूक उठने जैसा तो अब कुछ भी नहीं है
सबको होता रहे गुमां सो तुम आवाज़ देते रहना।
संग संग चलने जैसी इस सफ़र में अब कोई बात नहीं
हाँ मगर हैं सभी काफ़िले में अब भी, दिखाते रहना।
तहज़ीब-ए-मैकदा अकेले पीने की इजाज़त नहीं देता
सो तुम हर शाम मेरे नाम का भी ज़ाम सजाते रहना।
अहसान फ़रामोश नहीं हूँ मैं बस बात इतनी सी है
जो कभी आये मेरा ज़िक्र तो ये बताते रहना।
है ख़बर ये मुझे की हर रिश्ते की एक उम्र होती है
दस्तुर-ए-ज़माने की ख़ातिर मगर तुम ये लाश ढोते रहना।
गले लगाकर विदा अब करना या नहीं करना यारों
हाँ मगर वक़्त-ए-रुख़सत दूर से हाथ हिलाते रहना।

“मेला”

अगड़म बगड़म हो हल्ला
धींगा मस्ती झल्ला वल्ला
राह, काफ़िला रेलम पेला
कभी साथ, कभी कल्ला कल्ला
कभी झुका, कभी ऊँचा पल्ला
कोई चले तो कोई निठल्ला
कहीं काम तो कोई निरा वेल्ला
कहीं महफ़िलें, तो कहीं सफ़र अकेला
मेरा-तेरा, उसका-वुसका ठेलम-ठेला
कोई पुराना, कोई हाल का नया नवेला
चिड़िया-विड़िया, भालू-सालू, पिल्ला- विल्ला
आम, पपीता, सेव, अनार और केला-वेला
खाना-पीना, खेल-खिलोने, बल्ला-सल्ला
करतब-वरतब, नाच-गाना, झूला-वूला
दोस्त-यार तो कहीं प्यार का खेला-वेला
कहीं वफ़ा तो कहीं किसी ने खंज़र पेला
दीन, धरम और जात-पात का अजब झमेला
नित नई पहेलियों का जीवन ये अलबेला
हो मुबारक आप सभी को जीवन का मेला
हो मुबारक आप सभी को जीवन का मेला।

“अनमोल अनुभव”

वो हर रोज़ पूरी एक किताब पढ़ लेता है
सुना है सुबह शाम बुज़ुर्गों से बात कर लेता है।
तिज़ारत होते होंगे रिश्ते उसके लिये इस जहां में
जो ठीक-ठाक और सही सही हिसाब कर लेता है।
वो एक शख्स अब अकेला नहीं होता है रातों में
सुना है अब वो सितारों से बात कर लेता है!
उसकी बैठक से अब भी ठहाकों की आवाज़ आती है
सुना है वो अब भी शामें संग दोस्तों के गुलज़ार कर लेता है।
उस आम के पेड़ पर बौर आज भी आता है
जो साल भर कोयल का इंतज़ार कर लेता है।
कितना नरम गरम रहता है मेरे महबूब का स्वभाव
वो खुद को कभी माहताब तो कभी आफ़ताब कर लेता है।
वो ख्वाबों में भी तन्हा नहीं रहता है आजकल
सुना है सोते वक़्त वो महबूब की याद रख लेता है।
मेरे घर के छज्जे पर कोई पंछी कैद नहीं रहता है
जो आता है यहाँ वो दाना पानी लेकर उड़ लेता है।
मेरा गाँव क्यूँ इतना बदसूरत होता जा रहा है
क्या ये शहर से रोज़ बात कर लेता है।
हर एक निवाले में शामिल है खून पसीना माँ-बाप का
मगर बच्चा कद्र नहीं करता, कभी कभी बेस्वाद कह देता है।
वो सिर्फ एक शख़्स नहीं शख़्सियत है इस शहर में

सुना है वो औरों के लिये ख़ुद से इंकलाब कर लेता है।
डर है की कहीं मेरे कमरे के कोने चुगली ना कर दें
ना जाने कौन सा कोना मेरे कौन से राज़ रख लेता है।
तेरी आँखों का सब्र बस अब जवाब देने को है
तू क्यूँ इनमे हर रोज़ एक नया ख़्वाब भर लेता है।
खुली आँखों के सपने भी पूरे नहीं होते उसके
जो कोशिश तो करता है मगर हिम्मत तोड़ लेता है।

“कहता है”

वो मुझे अब इस शर्त पर दोस्त रहने को कहता है
हो जो कोई भी शिकायत तो ना कहने को कहता है।
मेरे लब-ओ-लहज़े का जो कभी मुरीद हुआ करता था
बात बात पर अब वो शख़्स मुझे लब सीने को कहता है।
मंज़िल तक के सफ़र में मेरा होना ज़रूरी है, उसके लिये
इसलिये जाने भी नहीं देता, संग संग चलने को कहता है।
मैं कितनी तफ़सील से कहना चाहता हूँ हाल-ए-दिल
मगर वो सुनता नहीं अल्फ़ाज़ कम करने को कहता है।
एक सफ़र में साथ साथ तो हम अब भी हैं
अब मगर वो ख़ामोश संग चलने को कहता है।
उसकी एक एक कारगुज़ारियों से वाकिफ़ हूँ मैं
दिल मेरा रूठने को और वो मने रहने को कहता है।
हमारी दोस्ती का सरेराह कहीं ना बन जाये कोई तमाशा
इसलिये दिल मेरा सब सहकर चुप बने रहने को कहता है।

“शिकायत क्यूँ तुमसे करूँ”

हो गर जो इज़ाज़त तो एक शिकायत तुमसे करूँ
हम्म... ख़ैर,फिर,मगर जाने दो मैं क्यूँ तुमसे करूँ।
मेरी किसी तवक्को पर खरे नहीं उतरते अब तुम
फिर, मगर कोई तवक्को भी मैं क्यूँ तुमसे करूँ।
वस्ल के कुछ लम्हात भी लुटा दिये तुमने यूँ ही
फिर मगर लम्स की चाहत मैं क्यूँ तुमसे करूँ।
तेरे वादों इरादों पर एतबार तो सिर्फ मुझे था
फिर मगर निभाने की आशा मैं क्यूँ तुमसे करूँ।
रात कल मेरे शाने पर सर रखकर शब भर रोती रही
फिर मगर मेरी तन्हाइयों की अलामत मैं क्यूँ तुमसे करूँ।
मेरे आबलों पर नमक छिड़कते तुम तरस नहीं खाते
फिर मगर कोई मरहम की चाहत मैं क्यूँ तुमसे करूँ।
तुझमें हुनर था ही नहीं लहरों से लड़कर पार जाने का
फिर मगर कश्ती डुबोने की शिकायत मैं क्यूँ तुमसे करूँ।

"मजबूत करे मतदान"

खेत खिलेगा, खलिहान हँसेगा
हर मेहनतकश इंसान बढ़ेगा
हर गाँव-गाँव का अब मेरे
प्यारा सा अरमान सजेगा
सपनों की इन बुनियादों को
मजबूत मेरा मतदान करेगा।

शहर सजेगा और विकसित होगा
हर बच्चा बच्चा अब शिक्षित होगा
ना हो अब कोई बीमार यहाँ
हर शरीर यहाँ अब पोषित होगा
सपनों की इन बुनियादों को
मजबूत मेरा मतदान करेगा।

घर घर होगा उजियारा
तिमिर यहाँ अब नहीं रुकेगा
फैली सड़कें, उजली राहें
रोशनी से अब मेरा हिंदुस्तान नहेगा
सपनों की इन बुनियादों को
मजबूत मेरा मतदान करेगा।

देश सजेगा, देश बढ़ेगा
देश मेरा, ऊँची और उड़ान भरेगा
नहीं रुकेगा, नहीं थमेगा
विश्व इसी का गुणगान करेगा
सपनों की इन बुनियादों को
मजबूत मेरा मतदान करेगा।

लोकतंत्र का मान बढ़ेगा
जन-जन का कल्याण करेगा
पावन पर्व के इस यज्ञ में
एक हाथ मेरा भी होगा
सपनों की इन बुनियादों को
मजबूत मेरा मतदान करेगा।

"होली है"

फाग, मल्हार, रंगो की फुहार
लड्डू, गुझिया और ठंडी सी बयार
टेसू के फूलों से रंगीन धरती हर प्रकार
शरारतें और बच्चों की धींगा मस्ती अपरंपार
बड़े-सयाने, अपने-बेगाने गुलाल लगाते
आशीर्वादी रंगो का त्योहार
देवर-भाभी, जीजा-साली रंग उड़ाते
शरारती रंगो का त्योहार
गाल पर गुलाल की एक लकीर
वो दूर खड़ी एक नार
प्यार-निसार रंगो का त्योहार
रंगीली सी भोर में याद आते रंगीले यार
भागो पकड़ो अरे रे वो निकल गया यार
लौंडे-लपाड़ी, फटे कपड़े, रंगीन टोपियां
घुटी भांग वो पी ली
नशे में सरोबार
गुज़रें इस गली, उस गली
याद आता वो पहला प्यार
रंग लगाते लोग और बढ़ता आपसी प्यार
बस रंग उड़े और रंग खिले
आज का हो यही कारोबार
हो मुबारक आप सभी को
होली का यह पावन त्योहार।

"विद्रोह"

सुनो, मुझसे ना अब तेरी ख़ुदाई निभाई जायेगी
मोहब्बत में अगले मोड़ पर अब बेवफाई आयेगी।
लब मेरे अब छोड़ेंगे खामोशी की नुमाइंदगी
जो बात है दिल में अब खुलकर बताई जायेगी।
किश्त किश्त में मैं खर्च हो गया तुझ पर पूरा
मगर अब ये ज़िस्म अदायगी बंद कर दी जायेगी।
तेरे बिना तो मैं मर ही जाऊँगा ना
तेरी ये गलतफहमी अब मिटाई जायेगी।
मेरा तुझसे सुलह करने का अब कोई इरादा नहीं
उलझी हुई है ज़िंदगी अब और उलझाई जायेगी।
मुबारक हों अब तुम्हें फ़ासले हमारे दरमियान
बस निभाने की खातिर अब ना ये दूरी मिटाई जायेगी।
तेरा रूठना तुझे मुबारक आज से मेरे दोस्त
तेरी ज़िद अब मुझसे और ना मनाई जायेगी।
तेरी नादानी का बोझ मुझसे अब और ना उठेगा
तेरी बदमाशी मुझसे अब और गले ना लगाई जायेगी।
तुझे तेरे ख़्वाब अब अपनी आँखों से ही देखने होंगे
तेरे वास्ते मुझसे अब और नींद ना गवाई जायेगी।
अच्छा ही होगा जो तू ना रखे अब मुझसे कोई वास्ता
मेरे किरदार के हर रंग से अब तुझे अजनबीयत की बू आयेगी।
अजनबी रास्तों पर इसके आगे का सफर मुझे मुबारक

तुझसे अब किसी भी मोड़ पर नज़र ना मिलाई जायेगी।
अपने ही चरागों से खतरा है इस नशेमन को
अब यहाँ जुगनुओं से रोशनी कराई जायेगी।
कल रात जुगनुओं की संगोष्ठी में, शोर बड़ा ये आम था
की सहर होते ही सूरज को उसकी नानी याद दिलाई जायेगी।
अजब सी वहशत है इस शहर को रोशनी की
सुना है आज रात यहां एक बस्ती जलाई जायेगी।
हुक्मरानी इंसानों के बस की बात कहाँ
हुक्मरानी अब परिंदों से कराई जायेगी।
सुना है कल फिर तुम बिकोगे बाजार में
चलो देखें तुम्हारी क्या बोली लगाई जायेगी।

“बेलगाम कलम”

क्यूँ आज कलम चलने को नहीं मचलने को बेक़रार है
हर हर्फ़ में ही कोई ना कोई राज़ खुलने के आसार हैं।

बचपन की शरारत, जवानी की खिलाफ़त
वर्तमान की हकीकत, भविष्य की अलामात
सफ़लताओं की चाहत, विफ़लताओं से अदावत
क्या क्या ना लिखने को बेक़रार है
कलम नहीं दो धारी तलवार है
खुद ही के कटने के आसार हैं।

थोड़ा झूठ, कुछ मक्कारी
बुरी संगत, गलत दोस्ती यारी
बेमतलब का आकर्षण, एक तरफ़ा प्यार की बीमारी
थोड़ा थोड़ा सब कुछ लिखने को बेक़रार है
कलम नहीं शीशे की दीवार है, आर पार दिखने के आसार हैं।

कुछ कमजोरी, कुछ ताकत
कुछ चटकी बातें, कुछ सही सलामत
कुछ दिन धुँधले से, कुछ रातें क़यामत
चोरी चोरी सब कुछ लिखने को बेक़रार है
कलम नहीं रूठा हमराज़ है, गुस्सा है खुल जाने के आसार हैं।

कुछ खुद से किये झूठे वादे, कुछ कच्चे इरादे
कुछ पाँव लड़खड़ाते, कुछ ख़्वाब सीधे सादे
कुछ लम्हे ज़मीं पर, कोई बात फ़लक पर बिठा दे
भूला बिसरा सब कुछ लिखने को बेक़रार है
कलम नहीं पांचाली की हँसी है, महाभारत होने के आसार हैं।

कुछ पल मिलन के, कुछ बिछुड़न के लम्हात
कुछ रंग घालमेल के, कुछ बदरंग हालात
कुछ ज़ज्बातों की सिहरन, कुछ बर्फ़ीली पूस की रात
ठंडा गरम सब कुछ लिखने को बेक़रार है
कलम नहीं स्याह टार है, सब कुछ काला होने के आसार हैं।

कुछ सीधी पगडंडी, कुछ टेड़े मेड़े रास्ते
कुछ थोड़ा सा दिया गया धोखा,
तो कुछ असत्य अपनों के वास्ते
कभी मैले कुचेले, तो कभी रंगीन लिबास थे
अच्छा बुरा सब कुछ लिखने को बेक़रार है
कलम नहीं सत्य की बाँग है, सवेरा होने के आसार हैं।

“अकेलापन”

कोई उस कोयल से बोलो की ना गाये इस पेड़ पर
अब कहाँ इस पर बौर आता है
समझा दो इसे की अब शोर ना करे
कि मुझे अकेलापन भाता है।

तमन्नाओं से कह दो कि अब ना दस्तक दें इस दिल पर
अब यहाँ मायूसी का अहाता है
समझा दो इन्हें कि अब ना मचलें
कि मुझे अकेलापन भाता है।

डाकिये से कह दो की ना करे इस गली का फेरा
अब यहाँ, कहाँ कोई ख़त आता है
समझा दो उसे कि ना फेंके खुशियाँ या गम मेरे आँगन में
कि मुझे अकेलापन भाता है।

दोस्तों से कह दो की अब यहाँ नही सजती महफ़िलें
अब तो लुट चुका सारा मेला है
समझा दो उन्हें यहाँ ना आयें मिलने
कि मुझे अकेलापन भाता है।

पत्तों की सरसराहट से कह दो की ना छेडें यहाँ सरगम
अब यहाँ ख़ामोशी का साज़ है

समझा दो इन्हें कि अब ना गायें कोई मिलन का गीत
कि मुझे अकेलापन भाता है।

उन बच्चों से कह दो के यहाँ न खिलखिलायें
अब यहाँ शांति में ख़लल पड़ता है
समझा दो इन्हें की अब ना चहकें
कि मुझे अकेलापन भाता है।

परस्तिश ख़ामोशी से करो दैर-ओ-हरम में
अब यहाँ का सन्नाटा चटकता है
समझा दो की अब लबों को सी लें
कि मुझे अकेलापन भाता है।

दिलकश नज़ारों से कह दो के ये रंग कहीं और फेंके
अब यहाँ तो सब बदरंग हुआ जाता है
समझा दो इन्हें की अब यूँ ना बिखरें
कि मुझे अकेलापन भाता है।

पर कुछ मत कहना
माँ की चूड़ी को, पायल को, मुस्कान को, प्यार को,
मुलायम डाँट को, मनुहार को, इंतज़ार को और हार श्रंगार को
पिता की गंभीरता को, रौबता को,
संयम को, सलाह को, छुपाते प्यार को,
सिखाते व्यवहार को और गमछे की नमी को
पत्नी के प्यार को, रार को,
तकरार को, फटकार को, संस्कार को,
चिंता को, बेफ़िक्री को, तुनकने को,

मनाने को, शरमाने को और मुस्काने को
बच्चे के इंतज़ार को,
उसके बाँहो के हार को, खिलखिलाने को,
झूठ मूट के रूठ जाने को,
शरारत को, ज़िद को और मान जाने को
कि ये सब मुझे भाता है।
फिर!
क्यूँ कोई अकेलापन अपनाता है
क्यूँ कोई अकेलापन अपनाता है
क्यूँ कोई अकेलापन अपनाता है।

“जीवन के मोड़”

तरह तरह के कितने मोड़
हम आये जीवन मे छोड़।
कुछ अपने से थे, तो कुछ पराये से,
कुछ जाने से, तो कुछ अनजाने से,
कुछ भूले से, तो कुछ बिसरे से,
कुछ चलते से, तो कुछ ठिठके से,
कुछ रूठे से कुछ माने से,
तो थे कुछ कड़ी धूप में शामियाने से।

मंज़िल की चाहत मे बदहवास हुआ जा रहा है
रास्ता तो तय कर रहा है
पर ना जाने कितने मोड़ छोड़ कर रहा है।

याद आती होगी शुरुआत कुछ धुंधली सी
करवट लेते, बिन बात के हँसते तो कभी यूँ ही रोते.
कभी रेंगते तो फिर घुटने चलते
इसी हेर फेर में पता नहीं कब चाल चली एक हल्की सी
कुछ तुतलाए, कुछ हकलाये फिर जाकर साफ़ बोल पाये
स्कूल गये, पढ़े पढ़ाए
इसी आपाधापी में पता नहीं कब मुड़ आये
और उसी मोड़ पर बचपन छोड़ आये।

याद तो आता होगा कॉलेज का पहला दिन
पर समझ ना आता होगा कब आख़िर आया
भर के ताकत पंखों में ऊँची परवाजों की
मदहोशी में डाली से मोह तोड़ आया
फिर लेकर मोड़ जीवन में मैं ऊँचा उड़ आया
और उसी पेड़ पर इंतज़ार में
पथराती दो जोड़ी आँखें छोड़ आया।

रास्ता अनजाना, सफ़र सुहाना
मिलना संगी साथियों का और फ़िर बिछड़ जाना
याद नहीं पड़ता कि कोई मील का पत्थर छोड़ा होगा
मुड़कर जाऊँ, क्या वहीं मिलेंगे
या वे भी मुड़ गये होंगे
फ़िर एक मोड़ मुड़ आया हूँ
जहाँ मैं अपने जिगरी छोड़ आया।

कुछ सफ़र रुमानी भी रहा होगा
यूँ ही किसी का पसंद आ जाना
फिर टूटकर चाहना
दोस्तों के सामने सलीम बनकर जाना
उनसे कुछ ना कह पाना
चाहत मिलने की और मिलने पर नज़र चुराना
कभी कहने को बढ़े, फिर ठिठके और सहम गये
यूँ ही गुज़रे दिन और स्मृति मे ही शेष रह गये
वक्त का पहिया फ़िर घूमा
अन्दर से कुछ टूटे से एक कसक छोड़कर हम मुड़ गये।

ठहरी ठहरी सी ज़िन्दगी ने अंगड़ाई ज़रूर ली होगी
और फिर तबस्सुम का रहगुज़र में हमसफ़र होना
हँसना- रोना, रूठना -मनाना,
दो से तीन, चार शायद कभी पाँच भी होना
कुछ वक्त यूँ ही गुज़र होगा ताबीर सा
जीवंत जीवन फिर कसमसाया होगा
और एक अनचाहा अनजाना मोड़ आया होगा
अपनों के जीवन यापन की चिंता में
तू फिर मुड़ आया होगा
जीना छोड़ आया होगा।
वक़्त, दौलत, सेहत और अपने
सब रेत सा फिसल गया था
और हर मोड़ पर कोई अपना छूट गया था।

“अनपढ़”

काश कभी ऐसा हो जाये
हर मानव अनपढ़ हो जाये!
सुबह चला था, काम बड़ा था
पढ़ लिख जो गये थे, तो आराम कहाँ था
चढ़ता दिन, तपती धरती और आग उगलता सूरज
रह रह कर खोता धीरज
निकल पड़ा दफ़्तर से कुछ खाने को
कुछ दूर ही चला था
नज़र पड़ी एक अनपढ़ सा पेड़ खड़ा था
शीतल छाया चारों ओर पड़ी थी
और पास ही में एक बिना पढ़ी रस्सी की खाट पड़ी थी
धम्म करके सुपुर्द किया ख़ुद को खाट के
और चाय पापड़ी ठेले से आदेशित कर दी ठाठ से
बोझिल पलकें रुक ना सकीं चाय के इंतज़ार में
तभी भर लिया एक अनपढ़ सी नींद ने अपने आगोश में।

सपने में भी था वो अनपढ़ पेड़
शीतल छाया, मीठे फल,
मधुर संगीत, शिक्षा ज्ञान की, विज्ञान की
और प्रकृति की शान की देता पेड
जीवन को श्वास और मन को विश्वास देता पेड़

सहसा ही वो बोल उठा
बोला मुझसे ले लो कुछ मीठे फल
खाकर भूख मिटा लो और मिटा लो सुस्ती सी
फिर बात करेंगे कुछ इच्छित सी
कर लेता था पहले बात थे दो दोस्त आस पास
बीता ही है कुछ अरसा
जब काट ले गये उन्हे कुछ शिक्षित से।

वहीं मिला एक अनपढ़ जंगल
सब रहते थे जिसमें हिल मिल
कहीँ नहीं यहाँ तेरा मेरा था
हर कोई खुशियाँ यहाँ दे रहा था
लगता था वो एक समुदाय मिश्रित सा
और कहीँ नहीं था भेद वर्ग, वर्ण, जाति का
रंग – रूप और शिक्षित का।

आये हैं कुछ अनपढ़ पंछी
नींद भगाते, दाना चुगते,
कलरव करते, भूख बराबर खाना खाते
और कभी अतिथी आगमन बतलाते
ऊँचे उड़ते फ़िर नीचे आते
पंखों की ताकत आज़माते
नहीं गये ये कभी स्कूल
फिर भी रहते कितने कूल।

जंगल में थे कुछ क्रूर जानवर
कह सकते हैं की ये नहीं पढ़े हैं

इसलिये तो हिंसा करते हैं
हत्या करते कमज़ोरों की
ग्रास बनाते मजबूरों को
माना करते हैं हत्या ये अनपढ़ नादान
पर केवल भूख मिटाने को
भोजन श्रँखला रचाने को
जो की है ईश्वर का विधान।

अल्लहड़ नदियां, खुले केश से झरने,
गुमसुम अनमना सा सागर,
अठखेलियाँ करते समुद्री जीव,
सूरज, चन्दा और तारे, कहाँ पढ़े है सारे
फ़िर भी सब बस लिये हुए हैं देने का भाव
कहाँ आड़े आता हैं शिक्षा का आभाव।

सपना टूटा और आँख खुली
घर को दौड़ा और चिंतन किया थोड़ा
बच्चे भी जब तक अनपढ़ होते हैं
माना के कितने सच्चे होते हैं
तेरा मेरा अपना पराया से दूर
हिलमिल रहते भरपूर
पर ज्यों ज्यों पढ़ते जाते हैं
खुद बढ़ते हैं पर दिल छोटे होते जाते हैं।

माँ बाप भी जब अनपढ़ होते थे
कितना ज़्यादा अपने होते थे
अनपढ़ पापा घर में ख़ुशियाँ ज़्यादा

और पैसे कम लाते थे
जब से ज़्यादा पढ़ गये हैं पापा
बात बात पर झुँझलाते हैं
अब ख़ुशियाँ कम और पैसे ज़्यादा लाते हैं
माँ भी जब कम पढ़ती थी
ख़ुद हाथों से बच्चे गढ़ती थी
अब जब से माँ ऑफिस जाती है
दुनियादारी बस अनपढ़ आया सिखलाती है।

माना शिक्षा ज़रूरी है
शिक्षा जीवन शैली, जीवन दर्शन और जीवन यापन है
पर अब बहुत हुआ
पढ़ाई का तिलिस्म टूटना ज़रूरी है
हर मानव का अब अनपढ़ हो जाना ज़रूरी है।

“निकम्मा माज़ी”

जाने क्यूँ ये काँधे माज़ी को बेताल सा ढोते हैं
बहुत हुआ यारों उतारो इसे कि अब हाल में जीते हैं
वो जो तन्हा सा बैठा है शख़्स अपने बाड़े में,
चलो उसे खींच लाते हैं
गुदगुदाते हैं , खिलखिलाते हैं , ऊँचा उड़ाते हैं,
चलो उसे ज़िन्दगी का पता बताते हैं।

क्या कुछ बुरा गुज़रा है उस पर,
तो क्या सभी पर गुज़रता है,
चलो भूल जाते हैं
नया सोचते हैं, नया करते हैं,
चलो ज़िन्दगी को जीकर दिखाते हैं।

ये जो आँखों मे सैलाब लिये बैठे हो,
चलो इसे बहाते हैं
सुना देते हैं, अश्क़ बहा लेते हैं, मन हल्का कर आते हैं,
चलो ज़िन्दगी में फ़िर दोस्त बनाते हैं।

वो जो मोती समझकर जुटा रखे हैं तुमने गमों के आँसू,
चलो उन्हे सागर को वापस दे आते हैं
ज्वार चढ़ा है तो क्या पतवार चलाते हैं,
लहरों पर नाव बढ़ाते हैं, बीच भँवर में जाते हैं,
चलो ज़िन्दगी के नए मोती लाते हैं।

कल भी तो उड़े थे,
कट गये तो क्या
फिर नई हिम्मत जुटाते हैं
नया हौंसला, नई उमंग, नई चकरी,
नया मांझा, नई जोत लाते हैं,
चलो ज़िन्दगी की एक नई पतंग उड़ाते हैं।

थकन से चूर हुए,
जिए जी भर कि चलो अब सो जाते हैं
सुना है ख़्वाबों में आकर
फ़रिश्ते मुस्तक़बिल सजाते हैं।

"मिलने की आशा"

बगीचे ने क्यूँ आज सवाँरा है, ख़ुद को
फूलों ने भी ख़ुद को क्यूँ तराशा है
क्या वो गुज़रेगी इधर से,
या कि आने की आशा है
धड़कने क्यूँ बेकाबू हैं,
क्या उनसे मिलने की कोई आशा है।

पेड़ों ने क्यूँ आज शरारती किया है, ख़ुद को
क्यूँ गिरती पत्ती ने हवा में उनका बदन नक़्क़ाशा है
हवा में ख़ुशबू है उसकी, या के बिखरने की आशा है
बरबस ही क्यूँ रुक गया हूँ मैं,
क्या उनसे मिलने कि कोई आशा है।

घास भी क्यूँ हरा रंग भरकर ताज़ादम कर रही है, ख़ुद को
तितलियाँ भी नए पेरहने-रंगी में हैं, ये कैसा समा सा है
कुसुमाकर मे छिटका है उनका रंग, या के छिटकने की आशा है
क्यूँ सुर्ख़ हुआ जाता है चेहरा मेरा,
क्या उनसे मिलने की कोई आशा है।

मैना भी क्यूँ आज नए राग गाकर रियाज़ देती है, ख़ुद को
क्यूँ तोते के मन मे भी आज ऊँचा उड़ने कि अभिलाषा है
उपवन में वे गुंजित हैं, या के गुंजायमान होने की आशा है

क्यूँ मन में बज उठे हैं जलतरंग,
क्या उनसे मिलने की कोई आशा है।

झरना भी क्यूँ झरता ऐसे, जैसे केश खुलें हों ख़ुद के
जलधारा भी बहती ऐसे, जैसे कोई बिपाशा है
बह रहीं हैं इठलाईयाँ उनकी, या के बहने की आशा है
क्यूँ शिराओं में लहू हो रहा है गरम,
क्या उनसे मिलने की कोई आशा है।

कैफ़ियत क्या कहूँ भँवरे की, गुम किया है जिसने ख़ुद को
खिला फूल नहीं है उसकी ज़द मे, इसकी उसे निराशा है
खिल गये हैं वे इस वाटिका में, या के खिलने को हैं
क्यूँ बदन हुआ जाता है हल्का सा,
क्या उनसे मिलने की कोई आशा है।

मुख़्तलिफ़ सी कशिश क्यूँ दी है फ़िज़ाओं ने ख़ुद को
ये कैसी अंजुमन है, क्या माजरा है, क्या तो ये तमाशा है
रोशन हो चुकी है ये शमा, या कि रोशन होने की आशा है
क्यूँ फ़ना हो जाने को बेकरार है परवाना,
क्या उनसे मिलने की कोई आशा है।

"यूँ भी हो लिये"

समझे जब कुछ दुनिया को तो बचपन के हो लिये
माँ ने सिखाये जो सबक वो करीने से संजो लिये
कभी बिना बात के हँस लिये तो कभी बेमतलब रो लिये
सुकून के ये जो केवल पल थे जीवन में,
मील के पत्थर हो लिये।

बचपन बिसराया और जवानी के संग हो लिये
ख़ुद ही में से ख़ुद को किया रुख़्सत और लिपटकर रो लिये
ज़िन्दगी के बाज़ार में ख़ुद ही ख़ुद के रहबर हो लिये
गुज़रे हर बाज़ार से हम,
बस जहाँ दिखे आईने किनारे हो लिये।

दिल का घरोंदा तो पक्का रखा मगर आँगन कच्चा रख लिये
जो कुछ भी बरसा सब इसी मिट्टी में सुखो लिये
ज़िन्दगी के बागान में जो उगे यहीं के हो लिये
बोनी तो थीं मीठी ख़ुशियाँ ही मगर,
नमकीन सिसकियां भी बो लिये।

सबक सीखे जो ज़िन्दगी से वो अनुभवों के हवाले हो लिये
जो थे बुरे तो पानी पर, और जो थे भले तो पत्थरों पर लिख लिये
हर रंग के अरमानों से ज़िन्दगी के कमरे रंग लिये
कभी मख़मली हवा में हँस लिये,
तो कभी शुष्क हवा में रो लिये।

मतलब का सामान रख लिया और सफ़र के हो लिये
बेमानी सम्बंधों को झटका तो बोझिल कंधे हल्के हो लिये
जिन्दगी के मैख़ाने में जो भी प्याले मिले लबों के हो लिये
यूँ तो छाँव ही छाँव ही पीनी थी मुझे,
मगर बा वक़्त धूप के प्याले भी चख लिये।

"रूह ज़िंदा है"

शब भर उमड़ा था जो सैलाब इन आँखों में
मत पूँछो छलकने से उसे कैसे रोका है
जिस्म किया है सहरा उसने
तब जाकर इस दरिया को सोखा है।

बचपना खिलखिलाकर उतर आया था कल हरकतों में
मत पूँछो कितने जतनो से फिर संजीदगी ने उसे रोका है
कहाँ से निकल आती हैं ये शरारतें
क्या इस इमारत मे अभी भी बचा कोई झरोखा है।

कल रात फिर कुछ ख़्वाहिशें पुरानी लड़ पड़ी थीं जिस्म में
मत पूँछो कैसे उन्हे एक नाउम्मीदी की क़ैद में रोका है
कोई कह दो इन्हें कि अब ना मचलें
जिस्म की बही के पिछले पन्नों मे अब इनका लेखा जोखा है।

हर एक रोज़ मेरी मुझ से जीतने की जंग में
मत पूँछो कैसे ख़ुद को बिखरने से रोका है
कैसे समझाऊँ अब ख़ुद ही को,
कि इस जिस्म की भी अपनी एक लक्ष्मण रेखा है।

कुछ दबी यादों ने जिस्म भेदकर काँटे उगा दिये हैं सतह पर
मत पूँछो इन काँटो ने कितनी अच्छी यादों को भी रोका है

ज़हर ही ज़हर है अब बस मुझमें,
मीठा दिखना तो बस अब एक रवायत सरीखा है।

कल फिर लहू छलछला गया पुरानी खरोंचों में
मत पूँछो दिल के छालों को चटकने से कैसे रोका है
कोई दुआ ना कोई दवा काम ही काम आयेगी,
इन घावों के भरने को मैख़ाना ही सबसे चोखा है।

अब क्या कहूँ कितनी ज़िंदा कब्रें क़ैद हैं इस खंडहर में
किसी में बचपन, किसी में ख़्वाब और किसी में ख़ुद को रोका है
इश्तहारी ये बदन असल में है कब्रिस्तान, बाकी सब धोखा है।

“मन को /(से) आजादी”

जिरह देते हैं मन को,
गिरह सारी अब तोड़ देते हैं
कब तलक दरिया बहेगा साहिलों के दायरे में
चलो अब खुलकर बहते हैं
तटबंधों को तोड़ देते हैं।

हौसलों के पर देते हैं मन को
ज़ंजीरें सारी अब तोड़ देते हैं
कब तलक पंछी रहेगा पिंजरे के दायरे मे
चलो अब खुलकर उड़ते हैं
बंधनों को तोड़ देते हैं।

विस्तार देते हैं मन को
संकुचित सोच अब छोड़ देते हैं
कब तलक खुशबू रहेगी बगीचों के दायरे में
चलो अब गगन मे फैलते हैं
चमन को छोड़ देते हैं।

निर्देशन देते हैं मन को
मन की गुलामी अब छोड़ देते हैं
कब तलक जुगनू रहेंगे गुलशन के दायरे में
चलो इन्हें अब सितारा करते हैं
बाम-ए-फ़लक में छोड़ देते हैं।

ईबादतगाह करते हैं मन को
परस्तिश दैर-ओ-हरम में छोड़ देते हैं
कब तलक बस मैं ही रहेगा शामिल मुझमें
चलो अब मैं से हम होते हैं
सभी को ख़ुद से जोड़ लेते हैं।

“आत्मविश्वास”

मुख्तलिफ़ जो रख ली राय, तो क्या हुआ
किये जो कुछ सवाल ज़िन्दगी से, तो क्या हुआ
जिस दिन से चुनी है उस शख़्स ने एक अलग राह
एक अलहदा व्यक्तित्व का हुआ निर्माण, चलो अच्छा हुआ।

धड़कनें जो दे रहीं हैं एक नई धुन, तो क्या हुआ
वो आजकल बस मन की रहा है सुन, तो क्या हुआ
जिस दिन से किया है उस शख़्स ने दिल बच्चा
खिलखिलाता है, जी उठा है, चलो अच्छा हुआ।

जो था ग़ैरज़रूरी छूट गया, तो क्या हुआ
गठरी में से जो गया कुछ माल, तो क्या हुआ
जिस दिन से भरोसा लौटा है उसका ख़ुद पर
सफ़र हुआ और ख़ुशगवार, चलो अच्छा हुआ।

अलविदा जो उसने कहा हमसाये को, तो क्या हुआ
अकेले कर सकने का ला रहा जो अंदाज़, तो क्या हुआ
जिस दिन से छोड़ा है उसने सोना सिमटकर अपने साये से
साँस नहीं दबती, आँख नहीं डबडबाती अब, चलो अच्छा हुआ।

ख़ुद को जो वो कर रहा आज़ाद, तो क्या हुआ
जो तोड़ दिया उसने आईना आज, तो क्या हुआ
जिस दिन से निकला है वो ख़ुद की क़ैद से बाहर
ऊँची भरता है अब परवाज़, चलो अच्छा हुआ।

“याद नहीं आती”

दिन मीठे गुज़रते हैं, रातें भी तीखी नहीं जाती हैं
तन्हाइयाँ जबसे तेरी यादें संग नहीं लाती हैं।
ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ, ग़म की कोई सदा नहीं आती है
धड़कनें जब से मेरी, तेरी ख़ता नहीं गाती हैं।
उम्मीद और सुकूँ अब संग जोड़े से बैठ जाती हैं
ख़्वाहिशें जबसे मेरी, तेरी हूक नहीं उठाती हैं।
सब्र मेरा चुकता नहीं अब आशायें ढाँढस बँधाती हैं
ज़िक्र तेरा होता नहीं अब ख़ामोशियाँ मुझे सुलाती हैं।
छाँव की ठंडक है, अब धूप नहीं तपाती है
अब ये सड़कें तेरे आने की आस नहीं जगाती हैं।
बंधनों का दौर गया, उड़ाने मुझे बुलाती हैं
हर बीतते दिन के साथ बेड़ियाँ कटती जाती हैं।
जीता हूँ अब हर पल, ज़िन्दगी मुझे लुभाती है
एक तेरे जाने से कोई जान थोड़ी चली जाती है।

"गुमान रखिये औक़ात भर"

गुमान था जिसको अपने अनमोल होने का,
कल आजमाने खुद को बाज़ार में आ गया
लेता भी ना मिला कोई भाव उसका,
खड़े खड़े बंदा औक़ात में आ गया।

गुमान था जिसको अपने समंदर होने का,
कल मिटाने किसी की प्यास ज़िद में आ गया
एक क़तरा भी मीठा ना पिला सका,
मिटाते मिटाते प्यास वो ख़ुद प्यास में आ गया।

गुमान था जिसको अपने अजेय होने का,
कल हरा देने को सभी को मैदान में आ गया
एक ललकार भी ना लगा पाया था अभी,
कि घुड़सवार मैदान पे आ गया।

गुमान था जिसको अपने सूरज होने का,
कल जला देने को सब कुछ जोश में आ गया
एक किरण भी ना पहुँचा सका ज़मीन पर,
बस यूँ ही एक आवारा बादल सामने आ गया।

“साथ गर तेरा हो”

सुरमई इस शाम में
चलो यादों को टहला लायें
संग हमने जो तोड़े हैं कभी
चलो उन वादों को बहला लायें।

सूने इस नदी के किनारे में
चलो ख़्यालों को नहला लायें
ज़िस्म डुबो दें दरिया में
चलो जज़्बातों को पिघला लायें।

सितारों भरी इस रात में
चलो फ़लक से तारे तोड़ लायें
मै कह दूँ जरा चुपके से इनको
जायें तेरी मांग मे झिलमिलायें।

सुहानी इस सुबह मे
चलो गुलाबी सपने जगा लायें
फिर ख़ुद को नया जोश दें
चलो ख़्वाबों की ताबीर करा लायें।

“बरसात के बहाने”

बंद हुए मैख़ाने, साकी ने उलट दिये पैमाने
छाई घनघोर घटा, मेघ आये शराब बरसाने
बरसात के बहाने।
गुलशन बड़ा इतरा रहा है अपने हुस्न पर
गुल भी लगे हुए हैं शबाब और बढ़ाने
बरसात के बहाने।
क्षितिज पर काली घटा कब्ज़ा जमाये बैठी है
सूरज ने भी लगता है आज छुट्टी ले ली है
बरसात के बहाने।
धरती भी मशगूल है रंगने मे ख़ुद को
तितलियां भी निकली परों को भिगाने
बरसात के बहाने।
यहाँ हर कोई नशे में है किसी ना किसी शय के
इसमे क्या ख़ता मेरी जो पी ली थोड़ी मैने भी
बरसात के बहाने।
हुस्न को भी है ख़बर की ठीक नहीं
यूँ बेहिज़ाब बाहर निकलना खुले में
फिर भी वो चले आते हैं छत पर
ख़ुद को भिगाने,
बरसात के बहाने।

वो जिन तक अब सदा भी
नहीं जाती किसी भी सूरत
उन्हीं दोस्तों को बुलाया है
कुल्लहड़ मे तूफ़ान उठाने
बरसात के बहाने।
बचपन उदास बैठा है
कई दिनों से ज़िस्म मे छुपकर
चलो पानी बहाती नालियों में
काग़ज़ की कश्ती बहाने
बरसात के बहाने।
यूँ बंद ना रहो
मसरूफ़ियतों को कुछ आराम दो
खुल जाना, भीग लेना और रो लेना
बरसात के बहाने।

"मैं लौट आया हूँ"

ख़्वाहिशों को ज़िस्म से नोचकर आया हूँ
ज़िम्मेदारियों के बोझ से उबरकर आया हूँ
सुला ले अपनी गोद में ए ज़िन्दगी मुझे
मै कल रात एक पूरी मौत मर के आया हूँ।

लहू छलछलाते ज़ख़्म लेकर आया हूँ
दर्द भरे कुछ मंज़र हसीन ले आया हूँ
सहला दे, मरहम लगा दे ए ज़िन्दगी
मै कल रात ख़ुद से लड़कर आया हूँ।

दिल पर खरोचें हज़ार लेकर आया हूँ
आँखों मे नमी के बाज़ार लेकर आया हूँ
प्यास बुझा दे, पिला दे ए ज़िन्दगी मुझे
मै कल रात एक दरिया ख़ैरात दे आया हूँ।

उलझनों का आख़िरी सलाम लेकर आया हूँ
रूह के सुकून का सारा सामान ले आया हूँ
सुलझा दे फ़ुर्सत निकाल के ए ज़िन्दगी मुझे
मैं कल रात बेचैनियों को विराम दे आया हूँ।

“अपने-पराये”

नया ज़माना हर किस्म की
नुमाइश का पैरोकार नज़र आता है
गुज़रे ज़माने से ही अब तो
आँखों मे शर्म रखने कहा जाता है।

शिकायतें लेकर ना बैठे रहिये
ज़माने से, अकेले पड़ जाओगे
अच्छा हो की बुरा हो, हो लो साथ,
की कारवां-ए-ज़िन्दगी गुज़रा जाता है।

बेशक न रखो गैरों से
नाम का भी मेल-जोल, तुम्हारी मर्ज़ी
मगर बस ये रहे ख़याल
की दिल पर चोट कोई अपना ही लगता है।

ना उखाड़ो मील के पत्थर
ना मिटाओ निशां क़दमों के
भटके हुओं को रास्ता
यही सब तो बताता है।

मुल्क में ही था आब-ओ-दाना उस परिंदे का
जिसे कभी तुमने ही सरहद पार पहुँचाया था

अब भला क्यूँ रखते हो शिकायत लबों पर
की बच्चा मेरा मिलने भी नहीं आता है।

यूँ ही नहीं रखते बड़े बुज़ुर्ग
पोते पोतियों की चाहत
वो देखो हर शाम उंगली पकड़कर
ना जाने कौन किसको घुमा लाता है।

यूँ ना चला करो सरे राह
शफ़्फ़ाफ़ शख़्सियत ओढ़कर
फिर ना कहना की हर ओर से
कीचड़ मुझ ही पर क्यों उछाला जाता है।

“बाकी है”

है जो कहीं अगर ऊपरवाला, तो सुने जरा
अभी मदद आना बाकी है!
वक़्त पर तेरी लाठी में
अभी आवाज़ होना बाकी है
अब ना हुआ करे देर
तुरंत अंधेर छँटना बाकी है।

जो आते हो तुम सच में धरा पर
तो तेरा अवतार लेना बाकी है
है जो तू ही रचियता सभी का
फिर तेरा करतार दिखना बाकी
तुझको सबसे जोड़ दे
वो तार दिखना बाकी है।

जो तुमने जिया वो बचपन भेज दो
पूतना, बाकासुर और कंस का
संहार करना बाकी है
फिर माँ यशोदा को तेरे मुख में
सारा संसार दिखना बाकी है।

बिन तेरे अर्जुन खड़े हैं रण में,किंकर्तव्यविमूढ़!
समझाओ ज़रा आकर इन्हें

धर्म की रक्षा को अभी
वार करना बाकी है
द्रोपदी की लाज बचाने,
चीर आना बाकी है।

जो तुम थे तो गये ही क्यूँ
गये तो नहीं लौटे क्यूँ
तेरे होने का पत्थर ही अब निशां क्यूँ है
यकीनन इंसान तो हो ही चुका है पत्थर
फिर मगर क्या पत्थरों में भी
भगवान अभी बाकी है।

“क्यूँ नहीं है”

है तो ज़बान तेरे मुँह में भी, फिर तू मुँह खोलता क्यूँ नहीं है
वक़्त-ए-ज़रूरत चुप क्यूँ रहता है, तू कुछ बोलता क्यूँ नहीं है।
क्या हुआ जो हो गया कुछ नुक़सान तेरा एक दस्तक पर
अब मगर हर दस्तक पर तू दरवाज़ा खोलता क्यूँ नहीं है।
क्यूँ गले लगाते हो तपाक से हर अपने पराये को
तिजारत है सब कुछ यहाँ, तू नफ़ा नुक़सान तौलता क्यूँ नहीं है।
अभी अभी जो लूटा गया है तेरे सामने वो तू भी हो सकता है
ताज्जुब है, कुछ भी हो मगर खून तेरा खौलता क्यूँ नहीं है।
यूँ आँखें बंद कर लेने से मुसीबत नहीं टलने वाली
रूबरू-ए-हकीकत होने को तू आँखें खोलता क्यूँ नहीं है।
राहतें मिलती हैं ऊँची उड़ानों से यहाँ इस दहर में
अरमान क्यूँ बंद हैं मुट्ठी में तू मुट्ठी खोलता क्यूँ नहीं है।
तेरे दुश्मनों की पनाहगार है यही ज़िस्म तेरा
तू इन्हें पालता क्यूँ है बाहर धकेलता क्यूँ नहीं है।
है गर मोहब्बत तो ठहरकर ही सही मगर इज़हार तो कर
तू उसके सामने हकलाता क्यूँ है साफ साफ बोलता क्यूँ नहीं है।
कितना मटमैला हुआ करता था बचपन हमारा याद है तुम्हें
कितना शफ़्फ़ाफ़ है अब हर बचपन यहाँ, कोई बच्चा मिट्टी में खेलता क्यूँ नहीं है।
हर कोई रखता है घर में दोस्ती सिर्फ माँ से ही यहाँ
पिताजी कितने अकेले होंगे, कोई उनसे खुलकर बोलता क्यूँ नहीं है।

"मेरे अंधेरे"

अंधेरे क्यूँ मुझे गुनाहों के लिये उकसाते हैं
ख़ुमारी-ए-शब में आख़िर ख्याल क्यूँ तेरे आते हैं।
यूँ तो हर रात की होती है सुबह, सयानों ने कहा है
मगर फिर क्यूँ कुछ अंधेरे हमेशा को ठहर जाते हैं।
सारा दिन धूप मे नहाकर ही तो घर लौटता हूँ मैं
फिर ना जाने कहाँ से अंधेरे संग लिपटे चले आते हैं।
यूँ तो मैं उजाला भी बहुत खूब गाता हूँ
ना जाने क्यूँ लोग सिर्फ अंधेरा सुनने आते हैं।
कल उजाले ने एक दस्तक दी दरवाज़े पर और चला गया
अंधेरों से सीखें कुछ जो दरवाज़ा खुलने तक खटखटाते हैं।
कितने बनावटी होते हैं लोग मेरे उजाले में आस-पास
मेरे अंधेरों में ये सब लोग कितना बदल जाते हैं।
बहुत दूर निकल गये कुछ उजाले मुझे सफ़र में छोड़कर
अंधेरों को मगर देखो हर शाम संग मुझे मैख़ाने ले जाते हैं।
दिन के उजालों से भला क्यूँ करूँ मैं कोई भी शिकायत अब
रात में अंधेरे बदन की थकन पर मरहम लगाने चले आते हैं।
नफ़रतें हों भी तो क्यूँ भला मुझे अंधेरों से
मेरी तन्हाईयों में यही तो मुझसे बतियाते हैं।
उठो सब और ले जाओ अब अपने अपने उजाले यहां से
रात घिरने को है, कि मैं और मेरा अंधेरा अब सोने जाते हैं।

“तू हासिल मुझे”

तू मुझमें मुझसे ज़्यादा शामिल हो रही है
बता तो ज़रा क्या तू मुझे हासिल हो रही है।
मैं नहीं कहता ये तो तेरी दोस्त कहती हैं
तू मेरी किसी बात की तो कायल हो रही है।
तेरी आँखों की मुख़बिरी का पता तो तुझे भी है
मगर उनसे बड़ी चुगलखोर तो पायल हो रही है।
सब मेरे अरमान क्यूँ ठहर रहे हैं आकर तुझ पर ही
लहर-ए-आरज़ू को मेरी क्या तू साहिल हो रही है।
तेरे हुस्न की तारीफ़ में अब और क्या ही कहूँ
हर शब तू जलवानशीं चांद के मुकाबिल हो रही है।
मेरी हर थकन को जज़्ब कर लेता है साया तेरा
ज़रा देर सो लूँ क्या मैं पलक मेरी बोझिल हो रही है।
नज़र चुराकर तुझे देख लूँ और तुझे पता भी ना चले
सरे महफ़िल मेरी ऐसी कोशिश नाकाबिल हो रही है।
एक प्यार तेरा पाने को ना जाने कितने हैं होड़ में
ना जाने यहाँ कितनों की आज़माइश धूमिल हो रही है।
मेरी चादर पर की सलवटों पर हैं तेरे दस्तख़त
अब ये ना कहना की सोच मेरी जाहिल हो रही है।
तेरे बाहर निकलने पर अब एहतियातन पाबंदी ज़रूरी है
तुझे क्या ख़बर दिन-ब-दिन तू कितनी क़ातिल हो रही है।

"बैठा है"

मेरे क़त्ल का सामान लिये बैठा है
वो ज़ालिम चेहरे पर मुस्कान लिये बैठा है।
है उसकी ठोकरों में दिल मेरा पड़ा हुआ
फिर भी दिल मेरा उसका अरमान लिये बैठा है।
उसकी यादों में गिरफ़्तार रहता है रात दिन
वो शख़्स ज़िंदा है मगर ज़िन्दान लिये बैठा है।
यूँ तो उसकी आँखों में इनकार पढ़ सकता है वो
फिर भी दिल में उसकी हाँ की इम्कान लिये बैठा है।
ख़्वाहिश उसके दिख भर जाने की भी पूरी नहीं होती
वो ज़ालिम ना जाने कितने इम्तहान लिये बैठा है।
ना जाने उसे क्यूँ मैं, मेरा प्यार मंज़ूर नहीं है
हालाँकि वो दिल की दुनिया वीरान लिये बैठा है।
ताउम्र उसके इंतज़ार का वादा कर लिया है उसने
ना जाने कैसी ये ज़िद वो नादान लिये बैठा है।

“क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा”

कितनी शिद्दत से कह रहीं थी मेरी आँखें,
हाँ है मुझे प्यार
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
बेरोक चल रहीं थी,
नादान मेरी साँसें
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

वो जो शब्द मेरे अटक गये हलक में
निकले नहीं साफ़ साफ़
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
सर्द मेरे जज़्बातों पर
तुम बिखरो बनकर लिहाफ़
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

देख रहा था मैं ख़्वाब
सफ़र में हों हम साथ साथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
मैं सुनता रहूँ
तुम करती रहो कुछ भी बात
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

आहिस्ता-आहिस्ता गिरते पत्तों ने भी
किया था एक इशारा
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
वासंती हवाओं ने भी
था तुमको कितना पुकारा
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

गुज़ारिश-ए-दिल की उन सर्द हवाओं में
तुम सिमटकर आ जाओ मेरे पास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
पहलू में मेरे पिघलो तुम
और ना हो कोई आस-पास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

चाहत मेरी की मैं बैठा रहूँ
बस पकड़कर तेरा हाथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
बेख़याली में ही सही
हो मेरे कांधे और तेरे सर का साथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

तमन्ना मेरी कि हम मिलकर
शाम को सूरज पानी में उतारें
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
दूर उस पहाड़ की चोटी पर बैठकर
हम क्षितिज निहारें
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

वो गुस्सा मेरा
तेरे आरिज़ के तिल पर
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
हक हो बस मेरा
तेरे दिल पर
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

मेरी चुप्पी के समंदर के
रत्न वो जज़्बाती ख़ास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
मन में उठ रही लहरों का
वो बेताबी उल्लहास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

शिकायत वो मेरी
तेरी उस बलखाती जुल्फ़ से
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
नफरत वो मेरी
उसके लिखे हुए हर हर्फ़ से
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

दिल के गजर की पुकार
की तू करे मुझ पर विश्वास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
तेरी ना से
तू ना करे मुझे निराश
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

जीतने आया था तुम्हें
पर मैं कितना गया था हार
क्या तुम्हें कुछ ना दिखा
ए सितमगर तू जाते जाते
कर गया मुझे बेज़ार
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

आरज़ू-ए-दिल की छोड़ दे तू जाते जाते
अपनी कोई निशानी मेरे पास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
कुछ लम्हे वो अपने मिलने के
मैं रख लूँ समेटकर अपने पास
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

हूक वो मेरे दिल की
कि तुम आ लगो एक दफ़ा गले
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
डर था मुझे की हम
फिर कभी मिले ना मिले
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

कितना कुछ अनकहा
रह गया उस मुलाकात में
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
क्या ही खूब होता जो बनी रहती
गर्मजोशी हमारे ताल्लुकात में
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

मैं कितना और
होना चाहता था तेरे साथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
दिल ने मेरे चाही थी
फिर से एक मुलाकात
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

कब, क्यूँ, कहाँ और कैसे जैसी
ना जाने कितनी बात, करनी थी तेरे साथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
तेरे जाने पर
ना जाने कितनी धड़कनों ने छोड़ा साथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

थी मेरी आरज़ू
पलटकर तुम मुस्कुराकर हिला दो हाथ
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा
सुनो, सुनो, सुनो ना
दिल से कितनी निकली आवाज
क्या तुम्हें कुछ नहीं दिखा।

मेरी नज़रों ने तुम्हें
दूर तक छोड़ा था उस दिन
क्या तुम्हें ये भी ना दिखा
चलो अब जाने दो
तुमसे क्या कहें

तुम्हें तो ये भी ना दिखा
तुम्हें तो वो भी ना दिखा
सच ही तो है तुम्हें तो कुछ भी ना दिखा।